जॉयस मेयर

टूटे दिलों की चंगाई

परमेश्वर के वचन की
शक्ति द्वारा
पुन:निर्माण का अनुभव कीजिये

टूटे दिलों की चंगाई

टूटे दिलों की चंगाई

परमेश्वर के वचन शक्ति द्वारा
पुन:निर्माण का अनुभव कीजिये

जॉयस मेयर

JOYCE MEYER
MINISTRIES®
Nanakramguda, Hyderabad - 500 008

Unless otherwise indicated, all Scripture quotations are taken from the *The Amplified Bible* (AMP). *The Amplified Bible, Old Testament* copyright © 1965, 1987 by The Zondervan Corporation. *The Amplified New Testament,* copyright © 1954, 1958, 1987 by The Lockman Foundation. Used by permission.

Copyright © 2014 by Joyce Meyer Ministries - Asia

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed, or transmitted in any form or by any means, or stored in a database or retrieval system, without the prior written permission of Joyce Meyer Ministries - Asia.

Joyce Meyer Ministries - Asia
Nanakramguda,
Hyderabad - 500 008
Phone: +91-40-2300 6777
Website: www.jmmindia.org

Healing the Brokenhearted - Hindi
Experience Restoration Through the Power of God's Word

Printed at:
Caxton Offset Pvt. Ltd.
Hyderabad - 500 004

विषय-सूची

परिचय: परमेश्वर का वचन vii

1. परमेश्वर के प्रेम का अनुभव 1

2. अपने भविष्य के प्रति आश्वासन 11

3. मसीह में अपनी धार्मिकता को जानना 21

4. अपने जीवन में भय पर विजय पाना 33

निष्कर्ष: दृढ़ रहो! 43

शास्त्रवचन स्वीकारना 45

- परिचय: परमेश्वर का वचन 45
- परमेश्वर का प्रेम 46
- आपका भविष्य 51
- मसीह में तुम्हारी धार्मिकता 55
- भय पर विजय पाना 59
- दृढ़ रहना 64

लेखिका के बारे में 65

परिचय:
परमेश्वर का वचन

❤ *वह अपने वचन के द्वारा उनको चंगा करता है और जिस गड़हे में वे पड़े है उससे निकालता है*।

भजन संहिता 107:20

परमेश्वर का वचन हमें चंगा करता है और हमें बचाता है। वह हमें और हमारे जीवन को भी बदलता है।

परमेश्वर का वचन आपको बदल देगा।

भजन संहिता 1:1-3 में दाऊद ने लिखा कि वह व्यक्ति जो व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता है वह उस वृक्ष के समान है जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है वह कुछ भी करें वह सफल होता है।

पूरी तरह जड़ पकड़े वृक्ष के समान का मतलब है स्थिरता। आप स्थिर रह सकते है और जो भी आप करते है समृद्ध हो सकता है। उसे करने का मार्ग यही है कि परमेश्वर के वचन पर ध्यान लगाओ।

वचन पर ध्यान लगाने का मतलब है उसे बार बार अपने मन में दोहराओ, उस पर विचार करो और उस पर सोचो, और उसे स्वयं से कहो, जैसे प्रभु ने अपने सेवक यहोशू को आज्ञा दी थी।

> ❤ *व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिये कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा करने से ही तेरे सब काम सफल होंगे और तू प्रभावशाली होगा।*
>
> यहोशू 1:8

व्यवस्थाविवरण में हमें बताया गया है 30:14, ❤ *"परन्तु यह वचन तेरे बहुत निकट वरन तेरे मुंह और मन ही में है, ताकि तू इस पर चले।"*

यशायाह 55:11 में प्रभु हमसे वादा करते है, ❤ *"उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिये मै ने उसको भेजा है उसे वह सफल करेगा।"*

2 कुरिन्थियों 3:18 में प्रेरित पौलुस हमें सिखाते हैं कि हमें परमेश्वर के वचन में परमेश्वर का प्रताप देखना चाहिये हम उसी तेजस्वी रूप में बदलते जाते है। परमेश्वर का तेजस्वी रूप देखने का एक अंश यह भी है कि उस अद्‌भुत योजना को देखें जो उन्होंने हमारे लिये बनाई है और उस पर विश्वास करें।

परमेश्वर हमसे प्रेम करते है, और उनके पास बहुत अच्छी और तेजस्वी योजना है हमारे जीवन के लिये। इफिसियों के पहले अध्याय में पौलुस कहते

है कि परमेश्वर ने उद्धार की संपूर्ण योजना मसीह के द्वारा बनाई ताकि उस महान प्रेम की संतुष्टी हो जो उन्होंने हमसे किया।

इसका मतलब है कि परमेश्वर हमसे प्रेम करते हैं, आपके और आपके जीवन के लिये उनके पास एक अद्‌भुत और तेजस्वी योजना है । आपको उस पर विश्वास करना होगा और उसे स्वीकारना होगा।

शैतान ने परमेश्वर की योजना नष्ट करने की कोशिश की। उसने अपने जीवन में हमेशा यही जी तोड़ कोशिश कि आप स्वयं को बेकार समझें। क्यों? क्योंकि वह कभी यह नही चाहता कि इस पर विश्वास करें कि आपको परमेश्वर बहुत अधिक प्रेम करते हैं। शैतान जानता है कि परमेश्वर का वचन बार–बार सुनने से और उसे अपने भीतरी जीवन में बसा लेने से, आप बदल जायेंगे। और वह नही चाहता कि ऐसा हो।

इसीलिये मैने यह पुस्तक लिखी है। इसमें शास्त्रवचन है जो मेरा मानना है कि आपकी स्वयं की छवि बदल देंगे, इस प्रकार आपका वर्तमान और भविष्य दोनों बदल जायेंगे।

बाइबल के अनुसार, आप परमेश्वर की छबि अनुसार बनाये गये है। (उत्पत्ति 1:27) विश्वास कि जो परमेश्वर आपके बारे में कहते है वह आपका स्वयं के बारे में रवैया और राय बदल देता है। स्वयं से पूछिये, "मैं स्वयं को क्या समझती हूँ? मेरी अपने बारे में राय क्या है?" फिर स्वयं से पूछिये, "परमेश्वर मेरे बारे में क्या सोचते है? मेरे बारे में परमेश्वर की राय क्या है?"

जो परमेश्वर आपके बारे में कहते है और सोचते हैं वो उनके वचन में मिलता है। शास्त्रवचन इस पुस्तक में स्वीकारता है कि आप परमेश्वर से सहमत होंगे बजाय शत्रु के। शायद शैतान ने जीवन भर आपसे झूठ बोला, और आपने उस पर विश्वास किया। अब समय आ गया है कि परमेश्वर पर विश्वास करो।

यूहन्ना 17:17 में, यीशु ने कहा कि परमेश्वर का वचन सत्य है, और यूहन्ना 8:32 में उन्होंने कहा कि यही सच तुम्हे स्वतंत्र करेगा। परमेश्वर का वचन, सत्य का वचन न केवल हमें स्वतंत्र करता है वह हमारा स्वभाव और मानसिकता भी बदल देता है। इसीलिये आपको चाहिये कि आप इसे पढ़ें, इसका अध्ययन करें और इस पर ध्यान लगायें, इसे अपने भीतर उतर जाने दे।

मसीह में आप पाते है आत्मविश्वास, आनंद से भरपूर, विजय भाव, वफ़ादारी और परमेश्वर की मित्रता, वह व्यक्ति जो परमेश्वर की छबि अनुसार ढ़लना चाहता है। अपने वचन में परमेश्वर जो आपके बारे में कहते है उसे स्वीकार कीजिये।

जब आप ऐसा करते है तो परमेश्वर आपके जीवन में काम करना शुरू करते है। वह आपको टूटे दिल वाले, ज़ख्मी और भयभीत व्यक्ति से बदल कर अपना वफ़ादार दोस्त बना लेंगे जिससे वह प्रेम करते हैं और बहुत अधिक प्रेम करते हैं।

यशायाह 61:1-3 में हम पढ़ते है:

> ❤ *"परमेश्वर का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि यहोवा ने सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है और मुझे इसलिये भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शांति दूँ; और बंधुओं के लिए स्वतंत्रता का और कैदियों के लिये छुटकारे का प्रचार करूं ।*
>
> *कि यहोवा के प्रसन्न रहने के वर्ष का और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करूँ, कि सब विलाप करने वालों को शांति दूँ।*

और सिय्योन के विलाप करने वालों के सिर पर की राख दूर करके हर्ष का तेल लगाऊँ और उनकी उदासी हटाकर यश का ओढ़ना ओढ़ाऊं; जिससे वह धर्म के बांज़वृक्ष और यहोवा के लगाये हुये कहलायें और जिससे उसकी महिमा प्रकट हो।"

हाँ, परमेश्वर आपको बदल रहे हैं। वह आपका चरित्र बदल रहे हैं। वह आपका जीवन बदल रहे हैं। परमेश्वर आपसे प्रेम करते हैं। आप विशेष व्यक्ति हैं। शत्रु नही चाहता कि आप प्रेम अनुभव करें। परन्तु परमेश्वर ये चाहते है।

अगले पृष्ठों पर आप सीखेंगे कि न केवल परमेश्वर के प्रेम के प्रति निश्चिंत होना, पर अपने भविष्य के बारे में भी निश्चिंत कैसे हों, अपना धर्मीपन कैसे जाने (आप मसीह में क्या है) और भय से कैसे मुक्त हों जो आपको उन सभी आशीषों से वंचित करता है जो परमेश्वर आप पर उंडेलना चाहते हैं उस शानदार जीवन के लिये जो उन्होंने आपके लिये सुनियोजित किया है।

परमेश्वर आपको आशीष दें जब आप उनका वचन बोलाना शुरू करते है। उनका वचन उसके पास खाली न लौटे पर अपके जीवन में उनकी इच्छा और मकसद पूरा करें।

1
परमेश्वर के प्रेम का अनुभव

❤ *"परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया है, जयवंत से भी बढ़कर है क्योंकि मैं निश्चय जानता हूँ, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानतायें, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊँचाई, न गहराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह में है, अलग कर सकेगी।"*

रोमियों 8:37-39

इस परिच्छेद में प्रेरित पौलुस हमें यकीन दिलाते है कि चाहे हमारे जीवन में कोई भी विरोध क्यों न हो, शानदार विजय हमारी ही होगी। मसीह में जिसने हमसे इतना प्रेम किया हमारे लिये अपना जीवन बलिदान कर दिया।

यूहन्ना 3:16 यीशु स्वयं कहते है, ❤ *"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनंत जीवन पाये।"*

यीशु आपसे प्रेम करते है, व्यक्तिगत रूप से, इतना अधिक कि उन्होंने आपके लिये अपने प्राण दे दिये होते, चाहे आप पृथ्वी पर केवल एक ही प्राणी क्यों न होते।

प्रिय शिष्य यूहन्ना हमें बताते है कि ❤ *"प्रेम में भय नही होता, वरन सिद्ध प्रेम भय को दूर करता है, क्योंकि भय से कष्ट होता है, और जो भय करता है, वह प्रेम में सिद्ध नही हुआ। (यानी वह अभी तक प्रेम की संपूर्णता में बढ़ा नही)"* (1 युहना 4:28)।

जब हमारे दिलों में भय होता है, तो वे संकेत है कि हम इस ज्ञान के अभाव में अभी भी है कि परमेश्वर हमसे कितना अधिक प्रेम करते है।

यदि आप परमेश्वर के प्रेम की महानता जान ले, तो यह आपके सभी भय दूर कर देगा।

यूहन्ना 16:27 में यीशु ने कहा, ❤ *"क्योंकि पिता जो आप ही तुम में प्रीति रखता है, (तुमसे भरपूर प्रेम करता है) इसलिये तुमने मुझसे प्रीति रखी है, और यह भी प्रतीति की है (विश्वास किया है) कि मैं पिता की ओर निकल आया।"*

आपके लिये ये विश्वास करना कठिन है कि परमेश्वर आपका इतना अधिक ख्याल रखते है?

बहुत साल तक मैं अपने लिये परमेश्वर का प्रेम पाने में कामयाब न थी क्योंकि मैंने सोचा मुझे उनके प्रेम के योग्य होना पड़ेगा पर अब मैं जानती हूँ कि वह मुझसे प्रेम करते है, चाहे अभी मुझमें काफ़ी (कमियाँ) त्रुटियाँ हैं।

यूहन्ना 14:21 में यीशु हमें याद दिलाते है, ❤ *"जिसके पास मेरी आज्ञा है, और वह उन्हें मानता है, वही मुझसे प्रेम रखता है, और जो मुझसे प्रेम रखता है, उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मै उससे प्रेम रखूँगा और अपने आप को*

उस पर प्रकट करूँगा । (मैं उसे स्वयं दर्शन दूँगा, वह मुझे स्पष्ट देख पायेगा)"

यीशु अपने आपको प्रकट करना चाहते हैं आप पर।

आज्ञाकारिता सच्चा प्रेम का फल है, पर आप कभी भी परमेश्वर को उनकी आज्ञा मानने वाला इतना अधिक प्रेम नही कर पायेंगे जब तक कि आप पहले उनका प्रेम ग्रहण न कर लें। आप इसे कमा नही सकते, आप इसे भले कामों द्वारा खरीद नही सकते, या इसे अच्छे व्यवहार द्वारा खरीद नही सकते।

परमेश्वर का प्रेम मुफ़्त उपहार है; ये बिना शर्त है, ये हम तक आता है उस बलिदान द्वारा जो यीशु ने दिया जब वह क्रूस पर हमारे लिये मरे।

अभी ही परमेश्वर का प्रेम ग्रहण कीजिये । उनकी उपस्थिति में बैठिये और कहिये, "मेरा विश्वास है प्रभु कि आप मुझसे प्रेम करते है और मैं आपका प्रेम स्वीकार करता हूँ।"

1 यूहन्ना 4:19 में हम पढ़ते हैं, ❤ *"हम इसलिये प्रेम करते है कि पहले उसने प्रेम किया ।"* शायद हम उल्टी तरफ़ जा रहे है जो मैंने किया था कई साल पहले । शायद आप परमेश्वर से इतना अधिक प्रेम करने का यत्न कर रहे हो और इतना कुछ करना चाह रहे हो ताकि बदले में वह आपको प्रेम करें। 1 यूहन्ना 4:19 की और दुबारा गौर करें, ❤ *"हम इसलिये प्रेम करते है कि पहले उसने हमसे प्रेम किया ।"*

दाऊद परमेश्वर के प्रेम के प्रति आश्वस्त था जब उसने भजन संहिता 36:7 में कहा ❤ *"हे परमेश्वर तेरी करूणा कैसी अनमोल है ! मनुष्य तेरे पंखों के तले शरण लेते हैं ।"*

आप से मैं भजन संहिता 139 के परिच्छेद का उल्लेख करना चाहूँगी। दाऊद का परमेश्वर से बात करने का अद्‌भुत तरीका था, और हम भी अच्छे

रहेंगे यदि उसका उदाहरण लिया। अपने मुँह से स्वीकार करो जैसे इस भजन के वचनों में लिखा है:

❤ *"हे यहोवा, तूने मुझे जांच कर जान लिया है। तू मेरा उठना बैठना जानता है; और मेरे विचारों को दूर से ही समझ लेता है, मेरे चलने और लेटने की भी तू भली भांति छानबीन करता है, और मेरी पूरी चाल चलन का भेद जानता है।*

हे यहोवा, मेरे मुँह में ऐसी कोई बात नही जिसे तू पूरी रीति से न जानता हो, तूने मुझे आगे पीछे घेर रखा है, और अपना हाथ मुझ पर रखे रहता है। यह ज्ञान मेरे लिये बहुत कठिन है; यह गम्भीर और मेरी समझ से बाहर है मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊँ?

वा तेरे सामने से किधर भागूँ? और मेरे लिये तो हे ईश्वर, तेरे विचार क्या ही बहुमूल्य हैं!

उनकी संख्या का जोड़ कैसा बड़ा है। यदि मैं उनको गिनता तो बालू के किनकों से भी अधिक ठहरते। जब मैं जाग उठता हूँ तब भी तेरे संग रहता हूँ।"

भजन संहिता 139:1-7,17,18

ये सचमुच सामर्थ्यपूर्ण है!

भविष्यवक्ता यशायाह हमें बताते हैं कि परमेश्वर हमारी भलाई करने के लिये प्रतीक्षा कर रहे हैं ❤ *"तौभी यहोवा इसलिये विलम्ब करता है कि तुम पर अनुग्रह करे, और इसलिये ऊँचे उठेगा कि तुम पर दया करें। क्योंकि यहोवा न्यायी परमेश्वर है, क्या ही धन्य है वे जो उस पर आशा लगाये रहते हैं।"* (यशायाह 30:18)

सोचिये इस विषय पर, परमेश्वर आपके साथ समय बिताना चाहते है क्योंकि वह आपसे प्रेम करते है और क्योंकि आप उनके लिये विशेष हैं।

परमेश्वर आपसे इतना प्रेम करते हैं कि हमारे मारे–मारे फिरने का हिसाब रखते है; हमारे आँसूओं को अपनी कुप्पी में रखते हैं, उनकी चर्चा अपनी पुस्तक में करते हैं। (भजन संहिता 56:8)

यूहन्ना 14:18 में यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, ❤ *"मैं तुम्हें अनाथ ना छोड़ूँगा (बिना दिलासा दिये अकेला, दुःखी, निराश, असहाय) मैं तुम्हारे पास (वापस) आता हूँ।"*

भजन संहिता 27:10, में दाऊद ने लिखा, ❤ *"मेरे माता-पिता ने मुझे छोड़ दिया है, परन्तु यहोवा मुझे संभाल लेगा" (अपने बच्चें की तरह मुझे गोद लेगा)।*

शायद आपमें उस स्वाभाविक प्रेम का अभाव है जिसकी इच्छा हर मनुष्य करता है और तलाशता है; शायद आपके अपने परिवार ने आपको छोड़ दिया हो, परमेश्वर आज आपको बताना चाहते है कि आपके लिये उनका प्रेम इतना मजबूत है, इतना महान है और इतना शक्तिशाली है कि किसी भी अन्य व्यक्ति के प्रेम को गँवाना आप सह लेंगे। उन्हें स्वयं को दिलासा देने दें और अपना टूटा हृदय उन्हें जोड़ने दें।

आप परमेश्वर के परिवार में गोद ले लिये गये हैं। आप उनकी संतान हैं और वे आपसे प्रेम करते हैं।

इफिसियों 3:17-19 में प्रेरित पौलुस ने आपके लिये और मेरे लिये प्रार्थना की,

> ❤ *"और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे (वास करे, साथ रहे और हमेशा के लिये अपना घर बनाये)! कि*

तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नेव डालकर सब पवित्र लोगों के साथ भलीभांति समझने की शक्ति पाओ; कि उसकी चौड़ाई और लम्बाई और ऊँचाई और गहराई कितनी है (परमेश्वर कि भक्ति में लीन लोग ऐसे प्रेम का अनुभव करते हैं।) और मसीह के उस प्रेम को जान सको (कि सचमुच उसे समझ सको अपने स्वयं के व्यवहारिक अनुभवों द्वारा जो ज्ञान से परे है, कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक (अपनी संपूर्णता से) परिपूर्ण हो जाओ (आपको परमेश्वरीय उपस्थिति की भरपूर और प्रचुर मात्रा मिले और आप वे शरीर बन जायें जो पूरी तरह परमेश्वर से परिपूर्ण है और उमड़ रहा है)।"

हाँ परमेश्वर आपसे प्रेम करते है और वह आप पर नज़र रखे है आपके सम्पूर्ण काल पर उनकी नज़र रहती है। यशायाह 49:16 में लिखा है, "कि देख मैने तेरा चित्र अपनी हथेलियों पर खोद के बनाया है।"

यूहन्ना 15:9 में यीशु कहते है ❤ *"पिता ने मुझसे प्रेम रखा वैसा ही मैने तुमसे प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो।"*

परमेश्वर आपसे कितना प्रेम करते हैं?

❤ *"इससे बड़ा प्रेम तो किसी का नही, कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दें"* (यूहन्ना 15:13)।

कोई भी आपसे इससे अधिक प्रेम नही कर सकता।

यीशु आपके मित्र बनना चाहते हैं। उन्होंने आपके लिये अपने प्राण दे दिये, ये दिखाने के लिये कि वो आपसे कितना अधिक प्रेम करते हैं।

रोमियों 5:6 मैं पौलुस हमें याद कराते है: ❤ *"क्योंकि जब हम निर्बल ही थे (और स्वयं की सहायता के असमर्थ थे) तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा (उनके स्थान पर अपने प्राण दिये)।"*

ठीक उसी समय, परमेश्वर ने अपना महान प्रेम हम पर प्रकट किया मसीह को हमारे लिये मरने को भेज कर जब कि हम अभी पापी ही थे।

फिर वचन 7 में पौलुस आगे ये कहते है: ❤ *"किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करें।"*

अंत में वचन 8 में, पौलुस समीक्षा करते है: ❤ *"परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा (मसीह परमेश्वर का अभिषिक्त)।"*

ओह, मेरे मित्र, परमेश्वर आपसे इतना अधिक प्रेम करते हैं कि पवित्र आत्मा परमेश्वर का प्रेम आप पर प्रगट करने का यत्न कर रहा है। अपने हृदय खोलो और परमेश्वर का प्रेम ग्रहण करो। आप जहाँ कही भी हों वह आपको स्वीकार करते है। वे कभी भी आपको नकारते और दोषित नहीं करते (यूहन्ना 3:18)।

इफ़िसियों 1:6 में पौलुस लिखते हैं कि हम परमेश्वर के अनुग्रह की महिमा द्वारा परमेश्वर के प्रेम में सेंतमेंत कर दिये गये। हम परमेश्वर द्वारा अपनी क्षमता द्वारा नही स्वीकारे गये, केवल मसीह द्वारा ही हम इतने धर्मी बनाये गये कि पिता तक आ सकें।

❤ *"कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो जिसे उसने उस प्यार में सेंइतमेत दिया" बाइबल इफ़िसियों* 1:7 *में कहती है, "हमको उसमें उसके लहू की द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों के क्षमा, उसके अनुग्रह के धन के*

अनुसार मिला है जिसे उसने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया।"

और यशायाह 54:10 में हमें बताया गया: ❤ *"चाहे पहाड़ हट जायें और पहाड़ियाँ टल जायें, तौभी मेरी करूणा तुझ पर से कभी न हटेगी, और मेरी शांतिदायक वाचा न टलेगी, यहोवा जो तुझ पर दया करता है, उसका यही वचन है।"*

1 कुरिन्थियों 1:9 में पौलुस हमें याद कराते हैं कि ❤ *"परमेश्वर सच्चा और विश्वास योग्य हैं (उनपर विश्वास किया जा सकता है कि वो अपना वचन निभायेंगे और उन पर भरोसा किया जा सकता है)"* उन्होंने वचन दिया है कि जब तक आप मसीह में विश्वास रखते है वें आपको कभी नकारेंगे नहीं। उन्होंने ये भी वचन दिया है कि वे आपसे प्रेम करेंगे और वे अपना वचन हमेशा निभाते हैं।

यूहन्ना 17:9,10 में यीशु स्वयं कहते है कि वे हमारे लिये विनंती करते हैं क्योंकि हम उनके हैं। परमेश्वर द्वारा आप मसीह को दे दिये गये और वे हमारे द्वारा महिमा प्रकट करते हैं।

परमेश्वर आप से प्रेम करते हैं । वह प्रेम ग्रहण करें।

भजन लेखक दाऊद के साथ यह स्वीकार करें:

> ❤ *"हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह (पूरे प्रेम से और आभार से उनकी स्तुति कर) और जो कुछ मुझमे है (मेरे भीतर तक गहरा) वे उसके पवित्र नाम को धन्य कहे।*
>
> *हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह (पूरे प्रेम से और आभार से उनकी स्तुति कर) और उसके किसी उपकार को न भूलना।*

वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता और तेरे सब रोगों को चंगा करता है, वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता है, और तेरे सर पर करूणा और दया का मुकुट बांधता है।"

भजन संहिता 103:1-4

बाइबल के एक अन्य प्रकाशित संस्करण में 5,6,7,8,11-13,17 वचन में दाऊद परमेश्वर के बारे में कहते हैं:

❤ *"वही तो मेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है, जिससे मेरी जवानी उकाब की नाई नई हो जाती है। यहोवा सब पीसे हुओं के लिये धर्म और न्याय का काम करता है। यहोवा दयालु और अनुग्रहकारी है, विलम्ब से कोप करने वाला और अति करूणामय है। जैसे आकाश पृथ्वी के ऊपर ऊँचा है, वैसे ही उसकी करूणा उसके डरवैयों के उपर प्रबल है। उदयाचल से अस्ताचल जितनी दूर है, उसने हमारे अपराधों को हमसे उतनी ही दूर कर दिया है। जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों (उसका भय मानने वाले) पर दया करता है परन्तु यहोवा की करूणा उसके डरवैयों पर युग-युग, और उसका धर्म उनके नाती, पोतों पर भी।"*

दुबारा दाऊद हमें भजन संहिता 32:10 में बताते है... ❤ *"जो यहोवा पर भरोसा रखता है वह करूणा से घिरा रहेगा"* और भजन संहिता 34:1-8 में वह लिखते है:

❤ *"मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा करूँगा, उसकी स्तुति निरंतर मेरे मुख से होती रहेगी, मै यहोवा पर घमंड करूँगा, नम्र लोग ये सुनकर आनंदित होंगे, मेरे साथ यहोवा की बड़ाई करो । और आओ हम मिलकर उसके नाम की स्तुति करें । मैं यहोवा के पास गया तब उसने मेरी सुन ली और मुझे पूरी रीति से निर्भय किया जिन्होंने उसकी ओर दृष्टि की, उन्होंने ज्योति पाई और उसका मुँह कभी काला न होने पाया । इस दीन जन ने पुकारा तब यहोवा ने सुन लिया । और उसको उसके सब कष्टों से छुड़ा लिया। यहोवा के डरवैयों के चारों ओर उसका दूत छावनी किये हुये उनको बचाता है परखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है क्या ही धन्य है वो पुरूष जो उसकी शरण लेता है।"*

पतरस हमें बताते है कि प्रेम कितने ही पापों को ढांप लेता है। (1 पतरस 4:8) प्रेम अनेक पापों को ढांप लेता है। परमेश्वर का प्रेम आपको ढांप लेता है। उस प्रेम के नीचे रहो। उसे अपने जीवन में आशीष बनने दो। उसे बार बार दिन में कई बार स्वीकार करो, "परमेश्वर मुझसे प्रेम करते है।"

इस अध्याय के शास्त्रवचन पर ध्यान कीजिये। ये आज्ञाकारी कदम आपके लिये परमेश्वर से वह सब दिलवायेगा जिसे आपको देने की उनकी इच्छा है– उनके अत्यधिक और श्रेष्ठ प्रेम का आश्वासन।

2
अपने भविष्य के प्रति आश्वासन

अब मैं आपसे उन शास्त्रवचनों पर विचार करना चाहूँगी जो उस महान भविष्य की बात करते हैं जिसकी योजना परमेश्वर ने हमारे लिये बनाई है। मैं चाहती हूँ कि आप ये जान लें कि आप बहुमूल्य है और परमेश्वर के मन में आपके लिये एक खास मक़सद था जब उसने आपकी रचना की।

एक गीत जिसका शीर्षक है "मेरा एक भाग्य है" इसमें गीतकार बताता है कि उसका एक भाग्य है और उसका एक मक़सद है और वे जानता है कि ये पूर्ण होगा, क्योंकि यही परमेश्वर द्वारा पहले से योजनाबद्ध है जिसने उसका चुनाव किया और वह अपने पवित्र आत्मा के सामर्थ्य द्वारा उसके ज़रिये से एक महान कार्य कर रहे है। इसका अंत एक बहुत ही प्रेरक स्वीकृति से होता है, "मेरा एक लक्ष्य है, और ये खोखली कामना ही नहीं क्योंकि मुझे मालूम है कि मैं ऐसे ही समय के लिये पैदा हुआ, बिल्कुल ऐसा ही समां, इसी प्रकार का समां।"

आपका क्या ख्याल है? आप अपने भविष्य की परिकल्पना कैसे करते है?

परमेश्वर चाहते है कि आप आशा से भरे रहें, और शैतान चाहता है कि आप आशाहीन हो जायें। परमेश्वर चाहता है कि आपके जीवन में हर दिन अच्छी बातें हो। शैतान भी चाहता है कि आप उम्मीद करें, पर वो चाहता है कि आप नाश और तबाही की उम्मीद करें।

नीतिवचन 15:15 का लेखक कहता है, ❤ *"दुखिया के सब दिन दुख भरे रहते हैं, परन्तु जिसका मन प्रसन्न रहता है वह मानों नित्य भोज में रहता है (चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हो)।"*

बुराई चाहने वाले बस बुरी बातों की ही उम्मीद करते रहते हैं। इससे पहले कि वो घटित हों। शास्त्रवचन में साफ लिखा है कि इन्हीं बुरे विचारों और आशंकाओं के कारण हमारे आने वाले दिन दुख से भर जाते हैं।

भजन संहिता 27:13 में दाऊद लिखते है ❤ *"(क्या, क्या होता मेरा) यदि मुझे विश्वास न होता कि जीवितों की पृथ्वी पर यहोवा की भलाई को देखूँगा तो मैं मुर्छित हो जाता"* अगले वचन में वे हमें उत्साहित करते हैं: *"यहोवा की बाट जोहता रह- हियाव बांध और तेरा हृदय दृढ़ रहे, हाँ, यहोवा की ही बाट जोहता रह।"*

यिर्मयाह 29:11 में परमेश्वर अपनी इच्छाएँ हम पर प्रकट करते हैं, ❤ *"क्योंकि यहोवा की ये वाणी है, कि जो कल्पनायें मैं तुम्हारे विषय में करता हूँ उन्हें मैं जानता हूँ, वे हानि की नही, वरन कुशल ही की हैं, और अंत में तुम्हारी आशा पूरी करूँगा।"*

याद कीजिये, शैतान आपको आशाहीन बनाना चाहता है। वो चाहता है कि आप आशाहीन दिखें आशाहीन सोंचे, आशाहीन बोलें और आशारहित कार्य करें।

पर दाऊद द्वारा भजन संहिता 42:11 में लिखे इन शक्तिशाली वचनों की ओर ध्यान दीजिये : ❤ *"हे मेरे प्राण तू क्यों गिरा जाता है? तू अंदर ही अंदर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर भरोसा रख, क्योंकि वह मेरे मुख की चमक (उद्धार) और मेरा परमेश्वर हैं, मैं फिर उसका धन्यवाद करूँगा।"*

इस तरह के शास्त्रवचनों को अपने हृदय में छुपाकर आप आशा और आनंदमयी कल्पना से भर जाते हैं। आप आशावान दिखेंगे, आशावान सोचेंगे, आशावान बात और आशावान कार्य करेंगे।

रोमियों 5:5 में प्रेरित पौलुस हमें बताते है कि ❤ *"आशा से लज्जा नही होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।"*

अन्य शब्दो में, वह जानते है कि परमेश्वर हमसे प्रेम करते हैं क्योंकि पवित्र आत्मा हमें सिखाता है। हम अपनी आशा परमेश्वर पर लगाते हैं क्योंकि हम निश्चिंत है कि वह हमसे प्रेम करते हैं और उन्होंने हमारे लिये एक महान भविष्य की योजना बनाई हुई है। और जब हमारी आशायें और कल्पनायें उनसे बंधी हैं, तो हम कभी भी निराश त्यागे हुये और शर्मिंदा महसूस नहीं करेंगे।

भजन संहिता 84:11 में हम पढ़ते है, ❤ *"क्योंकि यहोवा सूर्य और ढाल है, यहोवा अनुग्रह करेगा और महिमा देगा, और जो लोग खरी चाल चलते है, उनसे वह कोई अच्छा पदार्थ रख न छोड़ेगा।"*

फिलिप्पियों 1:6 में पौलुस हमें आश्वासन दिलाते है, ❤ *"मुझे इस बात का भरोसा है कि जिसने तुममें अच्छा काम आरंभ किया, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा। (जब तक वे वापस नहीं आ जाते) (इसी अच्छे काम का विकास) और इसे पूर्ण रूप से संपूर्णता तक आप में पूरा करना।"*

इफिसियों 2:10 में पौलुस इस महान आश्वासन का कारण समझाते हैं:

❤ *"क्योंकि हम उसके बनाये हुये है (उसके हाथों हमारी रचना हुई) और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गये (पुर्नजीवित किये गये) जिन्हें परमेश्वरन ने पहले से ही हमारे करने को तैयार किया था। (उन्होंने पहले से ही वे मार्ग तैयार किये थे जिसपर हमें चलना है), ताकि हम उनपर चलें। (भलाई का वो जीवन जीते हुये जो उन्होंने पहले से ही तय किया है और हमारे जीवन के लिये तैयार किया है)।"*

अब शायद आप स्वयं से प्रश्न पूछ रहे हों, यदि परमेश्वर के पास मेरे लिये इतनी अच्छी योजना है, तो मैं उसे कब देख पाऊँगा।

जवाब लिखा है, सभोपदेशक 3:17 में ❤ *"....क्योंकि उसके यहाँ एक-एक विषय और एक-एक काम का समय है।"*

परमेश्वर अपनी योजना और आपके जीवन के लिये अपना उद्देश्य अपने ही तय समय पर प्रकट करेंगे। आपको बस यही करना है जैसा पतरस सुझाव देते हैं, जो है कि परमेश्वर के बलवंत हाथ के नीचे (स्वयं को विनम्र करो) दीनता से रहो, जिससे वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ायें। (1 पतरस 5:6)

हबक्कूक 2:2 में परमेश्वर ने अपने भविष्यवक्ता को उसके भविष्य के बारे में दर्शन दिखाया, उसे आज्ञा दी कि वे उसे लिख डालें ताकि दूसरे भी उसे पढ़ सकें। पर अगले वचन में वह उससे ये कहते है ❤ *"क्योंकि इस दर्शन की बात नियत समय से पूरी होने वाली है, वरन इसके पूरे होने का समय वेग से आता है, इसमें धोखा न होगा। चाहे इसमें विलम्ब भी हो, तौभी उसकी बाट जोहते रहना, क्योंकि वह निश्चय पूरी होगी और उसमें देर न होगी।"* (हबक्कूक 2:3)

इब्रानियों 6:18,19 का लेखक हमें बताता है कि ये बातें इसलिये लिख दी गई कि, ❤ *"...हमारा दृढ़ता से ढांढस बँध जाये, जो शरण लेने के लिये दौड़े है, कि उस आशा को जो सामने रखी हुई है प्राप्त करें। वह आशा हमारे प्राण के लिये ऐसा लंगर है जो स्थिर और दृढ़ है और परदे के भीतर तक पहुँचता है।"*

और पौलुस कहते हैं कि ❤ *"...सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं, अर्थात उन्ही के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाये हुये हैं"* (रोमियों 8:28)। बाद में इफ्फिस की कलीसिया को लिखे अपने पत्र में पौलुस हमें याद कराते है कि हमारा एक मकसद है ये कहते हुये कि ❤ *"अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी विनंती और समझ से कहीं अधिक कार्य करता है (उसका कार्य हमारी प्रार्थनाओं, इच्छाओं, आशाओं और सपनों से कही बढ़कर होता है)।"* (इफिसियों 3:20)

परमेश्वर चाहते है कि हम आशा से भरे रहें क्योंकि वह हमारी आशा और सामर्थ से अधिक महान बातें करने को तैयार हैं। फिर भी, यदि आप आशाहीन हैं– जैसा शैतान चाहता है कि आप बनें रहें – फिर आप अपना वो दायित्व नहीं निभा रहें जो परमेश्वर ने आपसे करने को कहा है, जो ये है कि अपनी आशा और कल्पनायें उसपर छोड़ दो, विश्वास करो कि उनकी आपके जीवन के लिये अच्छी योजना है और ये भरोसा करो कि ये योजना अभी निर्माण की प्रक्रिया में है।

इफ़िसियों 1:11 में पौलुस प्रभु यीशु मसीह के बारे में कहते हैं ❤ *"उसी में जिसमें हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा की मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहले से ठहराये जाकर मिरास बने (हमें पहले से ही उसने अपनी इच्छा के अनुसार अपनी विरासत के लिये चुन लिया)।"*

याद कीजिये परमेश्वर की वो आज्ञा सो उसने अपने सेवक को दी यहोशू 1:8 में ❤ *"व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित से कभी न उतरने पाये, इसी में दिन रात ध्यान दिये रहना, इसलिये कि जो कुछ उसमें लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी कर, क्योंकि ऐसा करने से ही तेरे सब काम सुफल होंगे और तू प्रभावशाली होगा।"*

याद कीजिये व्यवस्था विवरण 30:14 में भी लिखा है ❤ *"परन्तु ये वचन तेरे बहुत निकट, वरन तेरे मुँह और मन ही में है, ताकि तू इस पर चलें।"*

यशायाह 55:11 में प्रभु हमें दिखाते है कि उनके वचन को स्वीकार करना किस तरह हमारे जीवन में उनके उद्देश्य को प्रकट करेगा– ❤ *"उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा (बिना कोई प्रभाव डाले, बेकार होकर) परन्तु, जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिये मैंने उसको भेजा है उसे वह सुफल करेगा।"*

अपना मुँह परमेश्वर को दे डालो, उसे उनका मुँह बनने दो। उनके वचन बोलने शुरू करो, क्योंकि उनके पास आपके लिये अच्छा भविष्य, अच्छा उद्देश्य और एक अच्छी योजना है परमेश्वर से सहमत होकर बात करो, शत्रु से नहीं।

याद कीजिये हम में से हर एक के लिये एक परमेश्वरीय भाग्य नियत है।

आपके विचार से आप भविष्य में कैसे होंगे? शैतान चाहता है कि आप सोंचे कि आप बेहतर होने की बजाय हमेशा बदतर होते जा रहे हैं। वो चाहता है कि आप इसी पर ध्यान दें कि आपको कितनी दूर जाना है, बजाय इसके कि आप कितनी दूर आ चुकें हैं।

क्या आप स्वयं से निराश हो जाते हैं, सोचने लगते हैं कि आप कभी

बदलेंगे नहीं? आशावान बनिये, परमेश्वर आपको बदल रहे हैं हर समय, उनका वचन आपके भीतर महान कार्य कर रहा है।

व्यवस्थाविवरण 7:22 हमें बताता है कि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे दुश्मनों को तेरे आगे से धीरे–धीरे निकाल देगा।

2 कुरिन्थियों 3:18 में पौलुस कहते है, कि देखो प्रभु अपने वचन द्वारा हमें हमेशा अपने स्वरूप अनुसार बदल रहे हैं या ढाल रहे हैं। और जब ऐसा होता है, ❤ "*हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश करके बदलते जाते है।*"

फिर रोमियों 12:2 में हम पढ़ते हैं कि हम बदल दिये जाते है हमारी संपूर्ण बुद्धि नई हो जाती है नये विचारों द्वारा, हमारी मानसिकता, आदर्श और रवैया बदल जाता है। और हम स्वयं से ये सिद्ध करते है कि हम ❤ *"परमेश्वर की भली, और भावती और सिद्ध इच्छा अनुभव करके सब मालूम करते जाते है।"*

कुलुस्सियाँ 1:27 में पौलुस कहते हैं, उस भेद को जो समयों और पीढ़ियों से गुप्त रहा। परन्तु अब मसीह द्वारा हम पर प्रकट हुआ। मसीह जो महिमा की आशा है तुममें रहता है। तुम्हारा स्वर्गीय पिता तुम्हें महिमामयी देखना चाहता है। तुम्हारे लिये उनकी महिमा की प्रभु की कल्पना ऐसी है कि उन्होने अपना पवित्र आत्मा भेजा, कि वह हममें वास करें और हम महिमामयी बनें।

मैं महिमा शब्द की परिभाषा कुछ ऐसे दूँगी। हमारे परमेश्वर की सभी अच्छाईयों का प्रकट होना। अपनी आशा उन पर डालो और विश्वास करो कि ये सभी शास्त्रवचन आपके लिये हैं।

साकारात्मक, विश्वासपूर्ण, वचन पर आधारित स्वीकृति करना सीखो। ऊँची आवाज में कहो "मैं परमेश्वर के स्वरूप में बदल रही हूँ उनके तेजस्वी रूप में अंश–अंश करके।" (2 कुरिन्थियों 3:18) "मुझमें मसीह वास करता है और

तेजस्वी बनने के लिये मेरी आशा है। परमेश्वर का आत्मा मुझे अंश अंश करके प्रतिदिन बदल रहा है। मेरे जीवन का उद्देश्य है। परमेश्वर की मेरे लिये अच्छी योजना है।"

याद रखिये रोमियों 4:17 के अनुसार हम एक ऐसे परमेश्वर की सेवा में है जो बातें है ही नहीं, वह उनका नाम ऐसा लेता है कि मानों वे हैं।

परमेश्वर अपने वचन में हमारे बारें में क्या कहते हैं?

> ❤ *"तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और परमेश्वर की निजप्रभा हो, इसलिये कि जिसने तुम्हें अंधकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो"*
>
> 1 पतरस 2:9

परमेश्वर चाहते है कि वो दिखायें या प्रगट करें, खुले में सामने लायें उन अद्भुत कार्यों की अच्छाईयों और गुणों को देखा जा सकें जो उन्होंने तुम्हारे लिये निर्धारित किये हैं।

ये कहना सीखो "मुझे अंधकार से बाहर बुलाया गया है परमेश्वर की अद्भुत ज्योति में।"

अपनी बुरी छवि रखना अंधकार है। स्वयं से घृणा करना अंधकार है। ये सोचना कि आपमें कोई गुण या आपका कोई मूल्य नहीं अंधकार है।

मलाकी 3:17 में हम सीखते हैं कि हम परमेश्वर के रत्न है, उनकी विशेष सम्पत्ति, उनका अजब खज़ाना हैं। हाँ, हम बहुमूल्य हैं, और हमारा एक उद्देश्य है। आपका एक भाग्य निर्धारित है। परमेश्वर की आपके जीवन के लिये महान योजना है। आपको इतिहास में योगदान देना हैं, पर आपको इसे ग्रहण करने के लिये विश्वास करना होगा।

आप शायद कहें, "परन्तु जॉयस, मैं कई बार असफल हो चुका हूँ। मैंने बहुत गलतियाँ की है, मैं जानता हूँ मैने परमेश्वर को निराश किया है।"

फिलिप्पियों 3:13,14 में पौलुस यह स्वीकार करते है कि वे अभी मंज़िल तक पहुँचे नहीं, संपूर्ण नही हुए, परन्तु वो ये भी स्वीकारते है कि वह हार मानने वाले नहीं :

> ❤ *"हे भाईयों, मेरी भावना ये नही कि मैं पकड़ चुका हूँ, परन्तु केवल यह एक काम करता हूँ, कि जो बातें पीछे रह गई है उनको भूलकर, आगे की बातें की ओर बढ़ता हुआ, निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह ईनाम पाऊँ जिसके लिये मसीह यीशु में उपर उठाया है।"*

परमेश्वर की हमारे जीवन के लिये अच्छी योजना है... अतीत में मत रहो। प्रभु का वचन सुनो जैसा कि यशायाह 43:18,19 में लिखा है:

> ❤ *"अब बीती हुई घटनाओं का स्मरण मत करो, ना प्राचीन काल की बातों पर मन लगाओ।*
>
> *देखो, मैं एक नई बात करता हूँ; वह अभी प्रकट होगी, क्या तुम उससे अंजान रहोगे? मैं जंगल में एक मार्ग बनाऊँगा और निर्जल देश में नदिया बहाऊँगा।"*

अंत में सुनिये जो परमेश्वर आपसे कह रहे हैं, यशायाह 43:25 में ❤ *"मैं वही हूँ जो अपने नाम के निमित्त तेरे अपराधो को मिटा देता हूँ और तेरे पापों को स्मरण न करूँगा।"*

परमेश्वर बहुत चाहते हैं कि आपको ये सब बनता देखें जो आपको बनाने की योजना उन्होने सोची है। वे चाहते है कि आप उस बहुतायत के जीवन का

पूरा आनंद उठाये जो उन्होने आपके भाग्य में रखा है। वे अपनी अनुग्रह और दयालुता से आपके द्वारा अतीत में की गई सभी गलतियाँ मिटाने को राज़ी हैं। उन्होंने भविष्य में की जाने वाली गलतियों की संभावना के लिये भी इंतजाम किया है।

आपको अतीत के पछतावे में रहने की ज़रूरत नहीं, न ही भविष्य के भय में, परमेश्वर आपकी किसी भी प्रकार के सहायता करने के लिये तैयार है।

यशायाह 40:31 में वह इसका वचन देते है, ❤ *"जो यहोवा की बाट जोहते हैं (जो उसकी ओर देखते हैं आशा के साथ) वे नया बल प्राप्त करते जायेंगे- वे उकाबों की नाईं उड़ेंगे। (परमेश्वर के निकट आयेंगे और सूर्य की ओर ऊपर उठेंगे), वे दौड़ेगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे।"*

परमेश्वर के अत्यधिक प्रेम का इससे अच्छा आश्वासन और क्या होगा और ये निश्चिंतता कि आने वाले दिनों में आपकी हर ज़रूरत को वो चमत्कारी ढंग से पूरा कर सकते हैं।

इस चमत्कारी वचन और उनकी बहुमूल्य योजना से लैस होकर, भविष्य का आशा और आत्मविश्वास से सामना करें और निश्चय जानें, कि जिस बात की उन्होंने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने को भी सामर्थी हैं। (रोमियों 4:21)

पीछे मुड़कर न देखिये आगे देखिये. विश्वास का कदम उठाइये।

याद रखिये, आपको एक परमेश्वरीय उद्देश्य पूरा करना है।

3
मसीह में अपनी धार्मिकता को जानना

अब मैं आपके साथ धार्मिकता के बारे में कुछ शास्त्रवचनों पर विचार करना चाहूँगी।

गाना "मैं परमेश्वर में धर्मी बनाया गया" में बताया गया है कि हम परमेश्वर के अपने परिवार में गोद लिये गये और उसके सिंहासन के आगे राज परिवार की तरह खड़े होंगे, मसीह में परिपूर्ण और उसकी विरासत के सहभागी, पापरहित, उसके बहुमूल्य लहू द्वारा खरीदे गये।

आप यीशु मसीह द्वारा परमेश्वर में धर्मी ठहराये गये, जैसा कि पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 5:21 में कहा: ❤ *"जो पाप से अज्ञात था उसी को उसने (परमेश्वर ने) हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जायें (जो हमें होना चाहिये स्वीकार किये जायें और सही किये जायें मसीह के साथ सही संबंधो द्वारा और उसकी अच्छाई द्वारा)"*

भजन संहिता 48:10 में प्रभु के बारे में ऐसा लिखा है, ❤ *"हे परमेश्वर तेरे नाम के योग्य तेरी स्तुति पृथ्वी की छोर तक होती है। तेरा दाहिना हाथ धर्म से भरा है (धर्म और न्याय)।"*

परमेश्वर का हाथ आपके ऊपर फैलाया गया है, धार्मिकता से परिपूर्ण।

1 कुरिन्थियों 1:8 में प्रेरित पौलुस हमें आश्वस्त करते है कि ❤ *"वह (परमेश्वर) अन्त तक दृढ़ भी करेगा (आपको स्थिर रखेगा, सामर्थ देगा और आपको न्याय का आश्वासन देगा; सभी दोषों और विरोधों के विरूद्ध वह आपकी सुरक्षा होगा) कि तुम हमारे प्रभु मसीह के दिन में निर्दोष ठहरो।"*

क्या आप जानते है इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि परमेश्वर अब आपको धार्मिक नज़रिये से देखते है। आज, जहाँ वो आपको चाहते हैं उन्होंने आपको पहुँचा दिया है। वे तैयार खड़े है आपको शैतान के झूठों से बचाने के लिये, जो हमारे भाईयों पर दोष लगाता है। (प्रकाशित वाक्य 12:10)

यदि आप अपना भरोसा यीशु मसीह पर रखते है। परमेश्वर आपको उतना अपराधी नहीं मानते। वे आपकी निर्दोषता साबित करने को राजी रहते हैं।

पर्वत के उपदेश से मसीह ने अपने शिष्यों से कहा था, ❤ *"धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और प्यासे है (इसी अवस्था में परमेश्वर की संतान पुनर्जीवित लोग होते हैं जो उनका उद्धार और विशेष अनुग्रह प्राप्त करते है) क्योंकि वे तृप्त किये जायेंगे"* (मत्ती 5:6)।

यीशु के अनुसार, परमेश्वर की पुनर्जीवित संतान होने के नाते आपको उस अवस्था में रहने का अधिकार है जहाँ आपको परमेश्वर की कृपा पाने का अधिकार है। आपको जीवन का आनंद उठाने का अधिकार है। ये आपके लिये परमेश्वर का उपहार है।

इस ब्यान को स्वीकार कीजिये: "मैं मसीह यीशु में परमेश्वर में धर्मी ठहराया गया हूँ।"

शायद आपने काफी श्रम किया हो स्वयं को परमेश्वर के लिये धर्मी बनाने की कोशिश में, पर धार्मिकता इस तरह नहीं मिलती। धार्मिकता, उद्धार की तरह, एक कार्य नहीं, ये एक उपहार है। अपने श्रम छोड़ दो और परमेश्वर पर विश्वास करना सीखो कि वो मसीह की धार्मिकता आपको प्रदान करें।

❤ *"अपना बोझ यहोवा पर डाल दें। (अपना पूरा भार उतार दें) वह तुझे संभालेगा; वह धर्मी को कभी टलने न देगा (वह कभी फिसलने, गिरने या असफल होने नही देगा)"* (भजन संहिता 55:22)।

रोमियों 4:1-3 में पौलुस अब्राहम की धार्मिकता के बारे में बताते है,

> ❤ *"सो हम क्या कहें कि हमारे शारीरिक पिता अब्राहम को क्या प्राप्त हुआ? (उन्होंने क्या किया, और इससे उनके स्थान पर क्या प्रभाव पड़ा और उन्हें क्या महानता प्राप्त हुई?)"*
>
> *क्योंकि यदि अब्राहम कामों से धर्मी ठहराया जाता (अपने दोषों से मुक्त हो न्यायी ठहराता) तो उसे घमंड करने की जगह होती, परन्तु परमेश्वर के निकट नहीं।*
>
> *पवित्र शास्त्र क्या कहता है? यह कि अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया (पूरा भरोसा किया), और यह लिये धार्मिकता गिना गया (परमेश्वर के साथ धार्मिक जीवन और धार्मिक जीवनशैली)।*

फिर वचन 23 और 24 में पौलुस आगे बताते हैं:

> ❤ *"और यह वचन, कि विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना*

गया, न केवल उसी के लिये लिखा गया वरन हमारे लिये भी जिनके लिये विश्वास धार्मिकता गिना जायेगा। (धार्मिकता और व्यवहार जो परमेश्वर को स्वीकार है), अर्थात हमारे लिये जो उस पर विश्वास करते है, (विश्वास करते हैं, आज्ञापालन करते है और भरोसा करते है) जिसने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया।"

अन्य शब्दों में पौलुस यहाँ हमें बता रहे है कि हम धार्मिकता पाते है विश्वास द्वारा, कार्य द्वारा नहीं। जब हम यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, परमेश्वर हमें धर्मी के रूप में देखते हैं। सचमुच, वह ये निर्णय लेते है कि वह हमें स्वयं के लिये धर्मी ठहरायें मसीह के लहू के कारण। वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर हैं, और उन्हें अधिकार है जो वे चाहें वो निर्णय लें।

अगले अध्याय के पहले वचन में पौलुस इसी पक्ष की समीक्षा करते हैं। ❤ *"सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरें, (दोषमुक्त हुए, धर्मी बनाये गये और परमेश्वर के साथ खड़े होने का अधिकार प्राप्त किया) तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें (शांति की हम परमेश्वर से मिल गये है और इसका आनंद उठायें)"* (रोमियों 5:1)।

धार्मिकता हमारे अपने फीके कार्यों द्वारा नहीं मिलती; ये मिलती है यीशु द्वारा संपूर्ण किये जाने पर।

भजन संहिता 37:25 में दाऊद ने लिखा – ❤ *"मैं लड़कपन से लेकर बुढ़ापे तक देखता आया हूँ; परन्तु न कभी धर्मी को त्यागा हुआ, और न उसके वंश को टुकड़े मांगते देखा है।"*

मेरा मानना है कि, माँ–बाप होने के नाते, हम अपने धार्मिकता का स्थान मसीह द्वारा परमेश्वर में ग्रहण कर सकते है, हमारे बच्चे वही धार्मिकता अपना सकते हैं।

जो माँ–बाप पालने में दोषी, दण्डित या बेकार महसूस करते हैं उनके बच्चें भी अकसर यही भावनाये माँ बाप से ग्रहण कर लेते हैं।

इसी तरह, यदि माता–पिता समझें और विश्वास करें कि परमेश्वर उनसे प्रेम करते हैं, और वह उनके लिए विशेष हैं, और उनके जीवन के लिये परमेश्वर की विशेष योजना है, और वे मसीह के लहू द्वारा धर्मी बन गये हैं। तो इस सच्चाई की छत्रछाया मे पलें बच्चे भी अपने माता–पिता के विश्वास से प्रभावित होते हैं और यीशु को स्वीकार करते है और उनके सभी वादों पर विश्वास करते हैं।

नीतिवचन 20:7 हमें बताता है कि ❤ *"धर्मी जो खराई से चलता है, उसके पीछे उसके लड़के बाले धन्य होते हैं, (उसके संतान को आशीष, संतुष्टी और आनंद मिलता है)।"*

और भजन संहिता 37:39 में हम पढ़ते है: ❤ *"धर्मियों की मुक्ति यहोवा की ओर से होती है (हमेशा), सही समय वह उनका दृढ़ गढ़ है।"*

परमेश्वर हमारे पक्ष में है। उनका वचन सत्य है, और वह शांति का वादा करता है, धार्मिकता, सुरक्षा और विरोध पर विजय का वचन है।

परमेश्वर के इस वचन को स्वीकार करना सीखिये, जो यशायाह 54:17 में मिलता है: ❤ *"जितने हथियार हानि के लिये बनाये जायें, उनमें से कोई सफल न होगा, और, जितने लोग मुद्दई होकर तुझपर नालिश करें (जितनी आवाज़ें तेरे विरुद्ध उठें) उन सभी से तू जीत जायेगा. यहोवा के दासों का यही भाग होगा (शांति धार्मिकता, सुरक्षा और विरोध पर विजय) और यह मेरे ही कारण धर्मी ठहरेंगे, यहोवा की यही वाणी है।"*

भजन संहिता 34:15 में दाऊद हमें बताता है:

> ❤ *"यहोवा की आँखे धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान भी उनकी दोहाई की ओर लगे रहते है।"*

सही शब्दों में इसका अर्थ है कि परमेश्वर आप पर नज़र रखे हुये हैं और आप की हर बात सुनते हैं क्योंकि वह आप से प्रेम करते हैं।

फिर वचन 17, 19 और 22 में दाऊद आगे कहते हैं:

> ❤ *"धर्मी दोहाई देते है और यहोवा सुनता है, और उनको विपत्तियों से छुड़ाता हैं। धर्मी पर बहुत सी विपत्तिया पड़ती तो है, परन्तु यहोवा उसको उन सबसे मुक्त करता है। यहोवा अपने दासों का प्राण मोल लेकर बचा लेता है, अब जितने उसके शरणागत हैं उनमें से कोई भी दोषी न ठहरेगा।"*

जिस समय आप प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करते है उसी समय से आप उनमें बढ़ना शुरू कर देते है। आप कह सकते हैं कि आप एक यात्रा पर हैं। जब आप इस यात्रा से गुज़र रहे हैं आप कुछ गलतियाँ करें, आपकी कार्यक्षमता शायद सही न हो, परन्तु यदि आपका हृदय प्रभु की ओर सही है, मेरा विश्वास है कि वह आपको सही और संपूर्ण समझेंगे इस यात्रा के दौरान।

यशायाह 54:14 में प्रभु घोषणा करते हैं: ❤ *"तू धार्मिकता के द्वारा स्थिर होगी; (परमेश्वर की इच्छा अनुमार सही और व्यवस्थित)" तू अंधेरे से बचेगी, क्योंकि तुझे डरना न पड़ेगा; और तू भयभीत होने से बचेगी, क्योंकि भय का कारण तेरे पास न आयेगा।*

नीतिवचन 28:1 में लिखा है कि समझौता न करने वाले धर्मी सिंहों की तरह निडर हैं। जब आप जानते हैं कि आप मसीह द्वारा धर्मी ठहराये गये, जब आपको इस क्षेत्र में सच्चा बोध प्राप्त हुआ है, फिर आप भय और आतंक में नही जियेंगे, क्योंकि धार्मिकता निडरता का निर्माण करती है:

❤ *"क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नही, जो हमारे निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके, वरन वह सब बातों में हमारी नाई परखा तो गया तौभी निष्पाप निकला।*

इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बांधकर चलें (परमेश्वर का सिंहासन हम पापियों के लिये अनुग्रह स्वरूप मिला है) कि हम पर दया हो (हमारी असफलताओं के लिये) और वह अनुग्रह पायें जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करें (आवश्यकता के समय सही समय पर हमारी सहायता करने वाले परमेश्वर के अनुग्रह से उत्पन्न हो)।"

इब्रानियों 4:15,16

हम परमेश्वर के अनुग्रह के आसन के पास निडरता से आ सकते है और ये हमारे संपूर्णता के कारण नहीं होता बल्कि उनके कारण होता है ❤ *"सो जब हम, अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे (दोषमुक्त हुए धर्मी बनाये गये और परमेश्वर के साथ धार्मिक संबंधों में जुड़े) तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे।"* (रोमियों 5:9)

शायद आपने अपने पूरे जीवन में यही सोचा हो, "मुझे क्या हो गया है?

यदि ऐसा है तो मैं आपको एक शुभ समाचार सुनाती हूँ: **आप धर्मी बना दिये गये हैं !**

अब आप में कुछ **धार्मिकता** है।"

मैं यही बात स्वीकार करने के लिये हमेशा लोगों को प्रोत्साहित करती हूँ – "शायद मै वहाँ नहीं जहाँ मुझे होना चाहिये, परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद, मैं वहाँ नहीं हूँ जहाँ हुआ करती थीं। मैं ठीक हूँ, और आगे बढ़ रही हूँ।

याद रखिये, बदलाव एक प्रक्रिया है, और आप उस प्रक्रिया से गुजर रहे हैं। जब आप बदल रहे है, परमेश्वर आपको धर्मी समझते हैं।

आप धर्मी है। ये वो स्थिति है जहाँ यीशु के लहू द्वारा परमेश्वर ने आपको पहुँचाया है।

आपके जीवन में होने वाले बदलाव धार्मिकता के उसी अवस्था का सदृश्य रूप है जो परमेश्वर ने विश्वास द्वारा आपको पहले ही दिया है।"

परमेश्वर की महिमा हो !

ये बहुत शक्तिशाली हैं !

जैसे–जैसे आप परमेश्वर का प्रेम और धार्मिकता ग्रहण करते हैं, आप असुरक्षा और नकारे जानने के डर से मुक्त होंगे।

अभी इसी समय, रुकिये और कहिये, "मै यीशु मसीह में परमेश्वर की धार्मिकता हूँ।" मैं आपको उत्साहित करूँगी कि इस सत्य को दिन में कई बार दोहरायें।

रोमियों 14:17 में प्रेरित पौलुस हमें बताता है कि ❤ *"परमेश्वर का राज्य खाना-पीना नहीं, परन्तु धर्म और मिलाप और वह आनंद है, जो पवित्र आत्मा से होता है"* धार्मिकता हमें शांति की ओर ले जाती है और शांति से मिलता है आनंद।

यदि आपमें शांति और आनंद का अभाव है, तो शायद आप में धार्मिकता के बोध का अभाव है। परमेश्वर अवश्य आपको शारीरिक और आर्थिक रूप से आशीष देना चाहते है।

फिर भी ज़्यादातर दोषी और दण्डित लोगों को कभी सच्ची समृद्धि नही मिलती। बाइबल हमें बताती है कि धर्मी। वो जो जानते है कि वो धर्मी है हमेशा समृद्ध रहते हैं और सुरक्षित रखे जाते है।

क्या आप जानते है कि परमेश्वर आपके बारे में क्या कहते है? भजन संहिता 1:3 में वे कहते है, वह उस वृक्ष के समान है जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है। और अपनी ऋतु में फलता है और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिये जो कुछ वो पुरूष करे वह सफल होता है।

परमेश्वर के साथ अपनी धार्मिकता पर ध्यान केंद्रित कीजिये, उस पर नही कि आपमें क्या दोष है।

हमने यहोशु 1:8 में देखा है, ❤*"व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाये, इसी में दिन रात ध्यान दिये रहना, इसलिये कि जो कुछ उसमें लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करें, क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सुफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।"*

याद कीजिये भजन संहिता –1:2,3 में लिखा है कि यदि आपने आदतन दिन–रात प्रभु के वचन पर ध्यान लगाया है फिर आप उस वृक्ष के समान होंगे जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है और हमेशा फल लाता है और हर बात में समृद्धि प्राप्त करता है।

परमेश्वर के वचन पर ध्यान लगाईये और परमेश्वर का वचन बोलिये। जब शैतान आपके दिमाग पर हमला करे, तो परमेश्वर के वचन द्वारा उस पर उलट वार कीजिये, याद कीजिये यीशु ने वचन बोलकर ही शैतान को हराया था, यह कहकर, ❤*"ये लिखा है"* (लूका 4:4,8,10)।

नीतिवचन 18:10 में लिखा है, ❤*"यहोवा का नाम दृढ़ कोट है, धर्मी उसमें भागकर सब दुर्घटनाओं से बचता है ये वह सुरक्षित किला है जिसमें धर्मी व्यक्ति शरण ले सकता है)।"*

भजन संहिता 72:7 में लिखा है कि धर्मीव्यक्ति के लिये... ❤*"जब तक चन्द्रमा बना रहेगा तब तक शांति बहुत रहेगी"* परमेश्वर में अपनी धार्मिकता

स्वीकार कीजिये ताकि आप शांति में फलफूल सकें। आप शायद सोच रहे हों, "पर उन बुरे कर्मो का क्या होगा जो मैने किये है?"

मैं आपको याद दिलाना चाहूँगी वो वचन जो परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के लिये कहे गये जो इब्रानियों 10:16-18 में दर्ज है:

> ❤ *"कि प्रभु कहता है, कि जो वाचा मै उन दिनों के बाद उनसे बांधूगा वह यह है कि अपनी व्यवस्थाओं को उनके हृदय पर लिखूँगा और मैं उनके विवेक में डालूँगा मैं उनके पापों को और उनके अधर्म के कामों को मैं कभी स्मरण न करूँगा और जब इनकी क्षमा हो गई (हमारे सब पापों को क्षमा और पाप से मिलने वाले दण्ड से मुक्ति) तो फिर पाप का बलिदान नही रहा।"*

अन्य शब्दों में, आपके पाप पूरी तरह खारिज कर दिये गये और दण्ड पूरी तरह मिटा दिया गया। क्योंकि यीशु ने इतनी संपूर्ण और पूरी कीमत चुकाई है कि आप कुछ भी नही कर सकते जो उसके मुकाबले में खड़ा हो सके। आप सिर्फ एक बात कर सकते है जो परमेश्वर को प्रसन्न कर सकेगी वह यह है कि आप पूरे विश्वास के साथ उसे स्वीकारें जो यीशु हमें मुफ़्त देना चाहते हैं।

इब्रानियों 10:19,20 में यीशु के बारे में कहा गया है कि उन्होंने अपने बलिदान द्वारा ❤ *"नये और जीवते मार्ग"* को खोल दिया है ताकि हम पूरे आत्मविश्वास के साथ उसमें प्रवेश करके उनकी उपस्थिति में पहुँचने को स्वतंत्र हो सके। और ये केवल उनकी शक्ति और महानता द्वारा ही हुआ है जो हमें उसके लहू से प्राप्त हुई।

अब उस पर्दे की ज़रूरत नही जो हमें परमेश्वर से अलग करता है।

कितना महिमामयी समाचार है !

निडरता से आप परमेश्वर के बंधुत्व में आ सकते है क्योंकि हमारे पाप रद्द कर दिये गये, हटा दिये गये और भुला दिये गये।

आनंद मनायें! आप मसीह में परमेश्वर के लिये धर्मी ठहरायें गये है। (2 कुरिन्थियों 5:21)

4
अपने जीवन में भय पर विजय पाना

क्या आप में स्वयं के बारे में कोई भय है?

गाना, "डरो नही मेरे बच्चे" में परमेश्वर यही जीवनदायी वचन कहते है:

"डरो नही मेरे बच्चे

मैं हमेशा संग हूँ।

मैं हमेशा तुम्हारे संग हूँ ।

मैं तुम्हारे आँसूओं की हर पीड़ा महसूस करता हूँ ।

डरो नही मेरे बच्चे मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।

मैं जानता हूँ जो मेरा है उसे कैसे संभालना है।"

2 तिमुथियुस 1:7 में प्रेरित पौलुस अपने नौजवान शिष्यों को लिखते है कि अपनी सेवकाई के कार्य करने से डरें नही और आगे बढ़ें– ❤ *"क्योंकि*

परमेश्वर ने हमें भय की नही पर सामर्थ, और प्रेम और संयम की आत्मा दी है।"

ये वचन याद रखिये। इसे याद कर लीजिये और हर बार जब आप भयभीत और बेचैन महसूस करें तो इसे दुहरायें।

भय परमेश्वर की ओर से नही आता। शैतान ही है जो हमारे हृदयों में भय भर देना चाहता है। परमेश्वर की आपके जीवन के लिये एक योजना है। उन पर विश्वास करके ये योजना प्राप्त कीजिये। पर याद रखिये, शैतान के पास भी आपके लिये एक योजना है। आप उसकी योजना में पड़ते है डर के कारण।

भजनकार दाऊद ने लिखा, ❤ *"मैं यहोवा के पास गया तब उसने मेरी सुन ली, और मुझे पूरी रीति से निर्भय किया"* (भजन संहिता 34:4)

यीशु आपके उद्धारकर्ता है। जब आप उन्हें पूरी विश्वसनीयता से ढूँढते हैं, वह आपको आपके भयों से मुक्त कराते हैं। यूहन्ना 14:27 में उन्होंने अपने भयभीत शीष्यों से कहा, ❤ *"तुम्हारा मन न घबराये और न डरे (आप उत्तेजित होने से बचिये, स्वयं को कभी भी अस्थिर, आशंकित और भयभीत न होने दे)।"*

इसका मतलब है कि आपको भय के विरूद्ध एक जोरदार मोर्चा लेना होगा। आज ये फैसला कीजिये कि आप भय की आत्मा को अपने जीवन में हावी नहीं होने देंगे और न ही उसे स्वयं को भ्रमित करने देंगे।

भजन संहिता 56:3,4 में दाऊद प्रभु के बारे में कहते हैं:

> ❤ *"जिस समय मुझे डर लगेगा, मैं तुम पर भरोसा रखूँगा ।*
> *परमेश्वर की सहायता से मैं उसके वचन की प्रशंसा करूँगा,*

परमेश्वर पर मैने भरोसा रखा है मै नहीं डरूँगा कोई प्राणी मेरा क्या कर सकता है?"

यशायाह 41:10 में प्रभु अपने लोगों को आश्वस्त करते है, ❤ *"मत डर (डरने की कोई बात नही) क्योंकि मैं तेरे संग हूँ, इधर-उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा ईश्वर हूँ, मैं तुझे दृढ करूँगा और तेरी सहायता करूँगा। अपने धर्ममय (विजयी) दाहिने हाथ से मैं तुझे संभाले रहूँगा।"*

इब्रानियों 13-5 का लेखक सांसारिक पदार्थों और सुरक्षा के मोह में पड़ने से चेतावनी देता है, हमें याद कराता है: ❤ *"क्योंकि उसने (परमेश्वरने) आप ही कहा है मैं तुझे कभी न छोडूँगा और न कभी तुझे त्यागूँगा। **मैं कभी नही, मैं कभी नहीं**, किसी भी हालत में तुम्हे असहाय नहीं छोडूँगा, न ही तुम्हे अकेला छोडूँमा तुम पर अपनी पकड़ कभी भी ढ़ीली न छोडूँगा, इस बात की खात्री जान लो)।"*

फिर वचन 6 में लेखक आगे ये कहता है, ❤ *"इसलिये हम बेधडक होकर कहते है, कि प्रभु, मेरा सहायक मैं न डरूँगा (न कोई डर न चिंता न आतंक मुझे सतायेगा) मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?"*

भय, यदि इस शब्द की व्याख्या की जाये तो यही मतलब निकलता है (झूठा सबूत जो सच्चा लगे), शत्रु आपको बताना चाहता है कि आपकी वर्तमान स्थिति इस बात का सबूत है कि भविष्य में आप असफल होंगे पर बाइबल हमें सिखाती है कि चाहे हमारी वर्तमान परिस्थितियाँ कैसी भी हों हालात चाहें कितने बुरे क्यों न दिखे, परमेश्वर के लिये कुछ भी असंभव नहीं। (मरकुस 9:17-23)

यशायाह 41:13 में हमें बताया गया है ❤ *"क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा, तेरा दाहिना हाथ पकड़कर कहूँगा, मत डर, मैं तेरी सहायता करूँगा।"*

इसका मतलब है कि आपको बुरा समाचार सुनने पर डरने की ज़रूरत नहीं, परमेश्वर पर विश्वास रखो। वह सब बातों को भलाई की ओर मोड़ सकते हैं।

रोमियों 8:28 में प्रेरित पौलुस हमें याद दिलाते है कि जो परमेश्वर द्वारा बुलाये गये है और उनके उद्देश्य और योजना द्वारा कार्य करते है और जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं उनके लिये सभी बातें मिलकर भलाई ही करती है।

यशायाह 43:1-3 में हम पढ़ते हैं ❤ *"हे इस्त्राएल तेरा रचने वाला, और हे याकूब तेरा सृजनहार यहोवा अब ये कहता है मत डर, क्योंकि मैंने तुझे छुड़ा लिया है, मैंने तुझे नाम लेकर बुलाया है तू मेरा ही है। जब तू जल में होकर जाये, मैं तेरे संग-संग रहूँगा और जब तू नदियों में होकर चले, तब वो तुम्हें ना डूबा सकेगी, जब तू आग में चले तब मुझे आँच न लगेगी, और उसकी लौ तुझे ना जला सकेगी। क्योंकि मैं यहोवा तेरा परमेश्वर हूँ, इस्त्राएल का पवित्र मैं तेरा उद्धारकर्ता हूँ..."*

भय पर लिखे इन शास्त्रवचनों को दुहराना और ऊँची आवाज़ में बोलना सीख लीजिये। ऐसे वातावरण में उन्हें बोलें जहाँ आप अकेले हो अपनी आत्मा मे ये ठान लीजिये कि आप भय में जीना नही चाहते। परमेश्वर का वचन दोहराकर आप शैतान को चेतावनी दे रहे है कि आप उसका अत्याचार अपने जीवन में सहना नही चाहते।

याद रखिये, बाइबल में लिखा है कि भय अत्याचार करता है (1 यूहन्ना 4:18) यीशु हमें अत्याचार से मुक्ति दिलाने के लिये मरे। जैसा हम इफ़िसियों 3:12,13 में देखते हैं जहाँ पौलुस हमें ये बताते हैं कि यीशु मसीह में विश्वास करने पर हम,

❤ *हमको उसपर विश्वास रखने से हियाव और भरोसे से*

निकट आने का अधिकार है इसलिये मैं विनंती करता हूँ हियाव न छोड़ो...

भजन संहिता 46:1,2 में हमें याद कराया गया है:

❤*परमेश्वर हमारा शरण स्थान और बल है, संकट में अतिसहज से मिलने वाला सहायक।*

इस कारण हमको कोई भय नहीं चाहें पृथ्वी उलट जाये और पहाड़ समुद्र के बीच में डाल दिये जाये।

यहोशु के पहले अध्याय से परमेश्वर बार–बार यहोशु का उत्साह बढ़ाते है, ❤*"हियाव बांधकर दृढ़ होकर..."* उसे आश्वस्त कराते हैं, ❤*"जहाँ- तू जायेगा वहाँ-वहाँ तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा" (वचन 6, 9)* इसीलिये हमें भयभीत होने की आवश्यकता नहीं, और परमेश्वर का संदेश आपके लिये भी वही है जो यहोशु के लिये था।

परमेश्वर आपके साथ है। वह कभी आपको न छोड़ेगे न त्यागेंगे। (इब्रानियों 13:5) वह तुम्हारे सभी समयों पर नज़र रखता है। (भजन संहिता 33:18) उसने अपने हाथों पर तुम्हारा चित्र खोदकर बनाया है (यशायाह 49:16) इसलिये आपको भयभीत होने की आवश्यकता नहीं। दृढ़ बने रहो, आत्मविश्वास और साहस से परिपूर्ण, बिना किसी भय के।

मत्ती 6:34 में पर्वत के उपदेश में, यीशु ने अपने शिष्यों को ये उपदेश दिया ❤*"सो कल के लिये चिंता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिंता आप कर लेगा, आज के लिये आज का ही दुख बहुत है।"*

मत्ती 8:23-26 में हम पढ़ते है कि कैसे शिष्य समुद्र में तूफान से भयभीत हो गये थे– ❤*"उसने उनसे कहा, हे आत्मविश्वासियों, क्यों डरते हो?*

तब उसने उठकर आँधी और पानी को डांटा और सब शांत हो गया" (वचन 26)।

(लूका 12:25,26) में यीशु पूछते है, ❤ *"तुममें से ऐसा कौन है जो चिंता करने से अपनी अवस्था में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है? इसलिये तुम सबसे छोटा काम भी नही कर सकते, तो और बातों के लिये क्यों चिंता करते हो,"*

डरो मत, कहा यशायाह ने अध्याय 54 वचन 4 में, ❤ *"मत डर, क्योंकि तू फिर लज्जित न होगी और तुझ पर स्याही न छायेगी। क्योंकि तू अपनी जवानी और लज्जा भूल जायेगी, और अपने विधवापन के नाम धराई को फिर स्मरण न करेगी। क्योंकि तेरा कर्ता तेरा पति है, उसका नाम सेनाओं का यहोवा है, और इस्त्राएल का पवित्र तेरा छुड़ाने वाला है, वह सारी पृथ्वी का भी परमेश्वर कहलायेगा।"*

फिर यशायाह 35:4 में हम पढ़ते हैं ❤ *"घबराने वालों से कहो हियाव बांधो, मत डरो ! देखो, तुम्हारा परमेश्वर पलटा लेने और प्रतिफल देने को आ रहा है। हाँ, परमेश्वर आकर तुम्हारा उद्धार करेगा।"*

परमेश्वर से मांगो कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दें, कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवंत होते आओ। तुम दृढ़ हो और भय में न पड़ो (इफिसियों 3:16)

मैं आपसे एक महान ज्ञानबोध बाँटना चाहूँगी जो भय से संबंधित है और परमेश्वर ने मुझे दिया। जब परमेश्वर हमसे अपने वचन द्वारा बात करते है और कहते है, ❤ *"डर मत,"* वो हमें ये आज्ञा नहीं दे रहें है कि भय अनुभव न करो। पर दरअसल वो कह रहे हैं, "जब तुम्हे भय महसूस हो, ये तब होता है जब शैतान भय द्वारा आप पर हमला करता है, उस समय पीछे मत हटो और ना ही भागो। इसके बजाय आगे बढ़ो चाहे डरते–डरते।"

बहुत साल तक मैंने सोचा था कि मैं डरपोक हूँ जब भी मैं भय महसूस करती। अब मैंने सीख लिया है कि डर पर हावी होने का तरीका यही है कि उससे भिड़ जाओ, सामना करो, और आगे बढ़ते रहो। वो करते हुए जो परमेश्वर ने आपसे कहा है, चाहे ये काम डरते–डरते ही क्यों न करना पड़े।

बाइबल के एक अन्य संस्करण में भजन संहिता 34:4 में दाऊद परमेश्वर के बारे में कहता है, ❤ *"मैं यहोवा के पास गया तब उसने मेरी सुन ली और मुझे पूरी रीति से निर्भय किया"* और यूहन्ना हमें याद दिलाते है *"प्रेम में भय नही होता, वरन सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है, क्योंकि भय से कष्ट होता है और जो भय करता है, वह प्रेम में सिद्ध नही हुआ (वह परमेश्वर के प्रेम में अभी संपूर्ण नही हुआ)"* (1 यूहन्ना 4:19)।

याद रखिये, परमेश्वर आप से प्रेम करते है! क्योंकि वे आपसे प्रेम करते हैं और इसी संपूर्ण प्रेम द्वारा वे आपकी चिंता करते हैं, आप निर्भय होकर जी सकते है।

शायद आपके जीवन में इस समय बहुत सारे डर हों कि भयरहित जीना शायद असंभव सा सपना लगे। यदि ऐसा है, तो आपको एक बात याद रखनी है। परमेश्वर आपको किसी भी समस्या से पूरी तरह मुक्त करा सकते हैं, सब एक साथ तुरन्त, पर वे हमेशा थोड़ा–थोड़ा करके देते हैं। इसलिये, हौंसला रखो कि परमेश्वर आप में कार्य कर रहे हैं। परमेश्वर ने आप में भलाई का कार्य शुरू किया है और वे उसे संपूर्ण करेंगे। (फिलिप्पियों 1:6)

❤ *"यहोवा मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है, मैं किस से डरूँ?"* भजन संहिता अध्याय 27 में भजन कार पूछता है, वचन 2 ❤ *"जब कुकर्मियों ने जो मुझे खा डालने के लिये मुझपर चढ़ाई की, तब वे ही ठोकर खाकर गिर पड़े। चाहें सेना भी मेरे विरुद्ध छावनी डाले तो भी मै ना डरूँगा चाहे मेरे विरुद्ध लड़ाई ठन जाये मै हियाव बाँधे निश्चित रहूँगा।"*

वचन 5 और 6 में इसी परिच्छेद में दाऊद कहता आगे कहता है कि जब विपत्ती आयेगी परमेश्वर उसे छिपा लेगे। वह उसे ऊँची चट्टान पर सुरक्षित रख देंगे जहाँ शत्रु न पहुँच सकें। फिर वे कहते है कि मै यहोवा का जय–जयकार करूंगा उसका भजन गाऊँगा और बलिदान चढ़ाऊँगा।

परमेश्वर ने जो राजा दाऊद के लिये किया वही वह आपके लिये करेंगे। प्रभु पर अपना विश्वास डालिये, आपके सभी भयों से मुक्ति दिलाने का सामर्थ उनमें है।

इन वचनो को सुनो जो प्रभु के दूत ने दानिय्येल से कहे थे। उसे दिलासा देते हुए कि उसकी प्रार्थनायें सुनी जा चुकी हैं ❤ *"हे दानिय्येल डर मत क्योंकि पहले ही दिन को जब तूने समझने बूझने के लिये मन लगाया, और अपने परमेश्वर के सामने अपने को दीन किया, उसी दिन तेरे वचन सुने गये और मैं तेरे वचनों के कारण आ गया हूँ"* (दानिय्येल 10:12)।

शैतान आपको बताने की कोशिश करेगा कि परमेश्वर ने आपकी प्रार्थना नही सुनी और वे आपकी एक बात नही सुनेगे। याद रखिये परमेश्वर का वचन आत्मा की तलवार है। (इफ़िसियों 6:17) वचन की तलवार द्वारा आप शत्रु को हटा सकते हैं। इन शास्त्र वचनों को अपने हृदय में छिपा लीजिये, उनपर रात–दिन ध्यान लगाइये।

केवल परमेश्वर के वचन द्वारा ही आप शत्रु को पराजित कर सकेंगे। जब आप परमेश्वर के वचन का ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं तभी आप शैतान के झूठ पहचान सकेंगे। परमेश्वर के वचन स्वीकार कीजिये और वे तुम्हें विजय के शीर्षस्थान पर पहुँचायेंगे।

शायद आप किसी ऐसी बात करने में डरते हो जिसके अधीन आप कार्य कर रहे हैं। शायद आप पर किसी बात का दोष लगाया गया है और आप

चिंतित हैं कि आप अपनी सफाई में क्या कहेंगे। यीशु के वचनों की ओर ध्यान दो जो उन्होंने लूका 12:11,12 में कहे ❤ *"जब लोग तुम्हें सभाओं और हाकिमों और अधिकारियों के सामने ले जायें तो चिंता ना करना कि हम किस रीति से या क्या उत्तर दें या क्या कहें। क्योंकि पवित्र आत्मा उसी घड़ी तुम्हें सिखा देगा कि क्या कहना चाहिये।"*

जब भी आप पर भय के आगे हथियार डालने की परीक्षा आये, भजन संहिता 23:1-6 दोहराओ, उसे प्रभु में स्वयं के विश्वास की स्वीकृति बनाओ कि उन्होंने सदा आपके लिये प्रबंध किया और सदा आप पर नज़र रखी?

> ❤ *"यहोवा मेरा चरवाहा है मुझे कुछ घटी न होगी। वह मुझे सुखदायी जल के झरने के पास ले चलता है। वह मेरे जी में जी लाता है। धर्म के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है।*
>
> *चाहे मैं घोर अंधकार से भरी हुई तराई में होकर चलूँ तो भी हानि से ना डरूँगा, क्योंकि तू मेरे साथ रहता है, तेरे सोंटे और लाठी से मुझे शांति मिलती है। तू मेरे सताने वाले के सामने मेरे लिये भोज़ बिछाता है, तूने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमड रहा है।*
>
> *निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ-साथ बनी रहेगी, और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूँगा।"*

निष्कर्ष:
दृढ़ रहो!

इस पुस्तक में मैं आपसे परमेश्वर के प्रेम पर आधारित शास्त्रवचनों पर विचार करूँगी, वह शानदार भविष्य जो उन्होंने आपके लिये सोच रखा है, मसीह में आपकी धार्मिकता, और भय से स्वतंत्रता।

इन शास्त्रवचनों में दिये गये सभी वचन आपको विरासत में मिले हैं प्रभु का सेवक होने के नाते, फिर भी, आपको ये जानने की ज़रूरत है कि ये सब शैतान आपसे चुराने की कोशिश करेगा। वह चाहता है कि आप वापस उसके दास हो जायं।

इसीलिये प्रेरित पौलुस गलातियाँ 5:1 में हमें बताते है, ❤ *"मसीह ने स्वतंत्रता के लिये हमें स्वतंत्र किया है; सो इसी में स्थिर रहो, और दासत्व के जुए में फिर से ना जुतो।"*

विजयी मसीही जीवन के कुछ मूलमंत्र हैं जो हैं स्थिरता, धीरज और सहनशीलता:

❤ *"सो अपना हियाव न छोड़ो क्योंकि उसका प्रतिफल बड़ा है। क्योंकि तुम्हें धीरज धरना अवश्य है, ताकि परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके तुम प्रतिज्ञा का फल पाओ।"*

इब्रानियों 10:35,36

आपके स्वर्गीय पिता चाहते हैं कि आप उसका भरपूर आनंद उठायें जो यीशु मसीह के लहू से खरीदा गया है। पक्का इरादा रखो। इसी समय एक निर्णय लो कि आप कभी हार नहीं मानेंगे। आनेवाले खण्डों में शास्त्र वचन स्वीकार करो जब तक कि ये आपके भीतर का अंग न बन जाये।

हमेशा याद रखिये परमेश्वर आपसे प्रेम करते हैं और उनके वचन में जीवन है।

शास्त्रवचन स्वीकारना

परिचय: परमेश्वर का वचन

परमेश्वर अपने वचन द्वारा मुझे चंगा करता है और जिस गडदे में मैं हूँ उससे बाहर निकालता है। (भजन संहिता 107:20)

"क्या ही धन्य हूँ मैं (आनन्दित हूँ, भाग्यशाली हूँ, समृध हूँ और संतुष्ट हूँ) क्या ही धनी हूँ मैं कि मैं दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता (उनके आदेश, उनकी योजनाएँ, उनकी सलाहें, उनके उद्देश्य नहीं मानता) और न ही पापियों के मार्ग में खड़ा होता हूँ, (उनके सामने झुकता नहीं) और न ठठ्ठा करने वालों की मंडली में बैठता हूँ।

परन्तु मैं यहोवा की व्यवस्था में प्रसन्न रहता हूँ; और उसकी व्यवस्था में रात–दिन ध्यान करता रहता हूँ।

मैं उस वृक्ष के समान हूँ, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है। पर अपने ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिये जो कुछ भी मैं करता हूँ वह सफल होता है।" (भजन संहिता 1:1-3)

व्यवस्था की ये पुस्तक मेरे चित्त से कभी न उतरने पाये, मैं इसी में दिन–रात ध्यान दिये रहूँ, इसलिये कि जो कुछ उसमें लिखा है उसके अनुसार

करने की मैं चौकसी करूँ; क्योंकि ऐसा करने से मेरे सब काम सुफल होंगे और मैं प्रभावशाली होऊँगा। (यहोशु 1:8)

ये वचन मेरे बहुत निकट है, वरन मेरे मुँह और मन ही में है ताकि मैं इसपर चलूँ। (व्यवस्थाविवरण 30:14)

इसीप्रकार से परमेश्वर का वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर उनके पास न लौटेगा (बिना कोई प्रभाव डाले, बेकार होकर) परन्तु, जो उनकी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिये उन्होंने मुझे भेजा है उसे वह सुफल करेगा। (यशायाह 55:11)

क्योंकि जब हम सबके उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रकट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है मैं उसी के तेजस्वी रूप में अंश-अंश करके बदलता जाऊँगा (2 कुरिन्थियों 3:18)।

परमेश्वर का वचन सत्य है और जैसे-जैसे मैं वचन का अध्ययन करूँगा और उसपर ध्यान लगाऊँगा, मैं सत्य को जानूंगा और सत्य मुझे स्वतंत्र करेगा। (यूहन्ना 17:17; 8:32)

अध्याय 1: परमेश्वर का प्रेम

परन्तु इन सब बातों में मैं उसके द्वारा जिसने मुझसे प्रेम किया, जयवन्त से भी बढ़ कर हूँ।

क्योंकि मैं निश्चय जानता हूँ, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानतायें, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊँचाई, न गहिराई और न कोई और सृष्टि, मुझे परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी। (रोमियों 8:37-39)

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया मेरे लिये। ताकि यदि मैं उस पर विश्वास करूं, तो मैं नाश न होऊ, परन्तु अनंत जीवन पाऊ। (यूहन्ना 3:16)

क्योंकि पिता तो आप ही मुझ से प्रीति रखता है, इसलिये कि मैंने यीशु से प्रीति रखी है, और यह भी प्रतीति की है, कि वह पिता की ओर से निकल आया। (यूहन्ना 16:27)

क्योंकि मेरे पास यीशु की आज्ञायें हैं और मैं उन्हें मानता हूँ, मैं (सचमुच) यीशु से प्रेम रखता हू और क्योंकि मैं यीशु से प्रेम रखता हूं, मुझ से उनके पिता भी प्रेम रखेंगे, और यीशु भी मुझसे प्रेम रखेंगे और अपने आप को मुझ पर प्रकट करेंगे (वह स्वयं को मुझे स्पष्ट दिखायेंगे और मेरे लिये स्वयं को वास्तविक बनायेंगे)। (यूहन्ना 14:22)

मैं प्रभु से प्रेम करता हूँ, क्योंकि पहले उन्होंने मुझसे प्रेम किया। (1 यूहन्ना 4:19)

हे परमेश्वर तेरी करूणा कैसी अनमोल है ! मैं तेरे पंखों के तले शरण लेता हूँ। (भजन संहिता 36:7)

हे यहोवा, तूने मुझे जाँच कर जान लिया है। तू मेरा उठना बैठना जानता है; और मेरे विचारों को दूर से ही समझ लेता है। मेरे चलने और लेटने की तू भलीभांति छानबीन करता है, और मेरी पूरी चाल चलन का भेद जानता है। हे यहोवा, मेरे मुँह में ऐसी कोई बात नहीं। जिसे तू पूरी रीति से न जानता हो। तूने मुझे आगे पीछे घेर रखा है, और अपना हाथ मुझ पर रखे रहता है।

यह ज्ञान मेरे लिये बहुत कठिन है, यह गम्भीर और मेरी समझ से बाहर है। मैं तेरे आत्मा से भाग कर किधर जाऊँ? वा तेरे सामने से किधर भागूँ?

और मेरे लिये तो हे ईश्वर, तेरे विचार क्या ही बहुमूल्य हैं! उनकी संख्या का जोड़ कैसा बड़ा है ! यदि मैं उनको गिनता तो वे बालू के किनको से भी अधिक ठहरते। जब मैं जाग उठता हूँ तब भी तेरे संग रहता हूँ। (भजन संहिता 139:1-7,17,18)

तौभी परमेश्वर इसलिये विलम्ब करता है (आशा में, इच्छा में और बाट जोहने में) कि मुझ पर अनुग्रह करें, और इसलिये स्वयं को ऊँचा उठाते हैं कि मुझ पर दया करे और मुझ पर अपनी कृपा दिखायें। क्योंकि परमेश्वर न्यायी परमेश्वर हैं; क्या ही धन्य हूँ मै कि मैं उन पर आशा लगाये रहता हूँ। मैं प्रतीक्षा करता हूँ, आशा करता हूँ और उम्मीद किये रहता हूँ (उनकी विजय, उनका लगाव, उनका प्रेम, उनकी शांति, उनका आनंद और उनका सबसे उत्तम, बिना शंका का साथ पाने को)। (यशायाह 30:18)

प्रभु मुझे अनाथ न छोड़ेगे (बिना दिलासे के, अकेला, दुखी, असहाय और बे सहारा)। (यूहन्ना 14:18)

मेरे माता – पिता ने तो मुझे छोड़ दिया है, परन्तु यहोवा मुझे सम्भाल लेगा। (भजन संहिता 27:10)

और मेरे विश्वास के द्वारा मसीह मेरे हृदय में बसे (रहे, बस जाये, अपना स्थाई घर बना ले) कि मैं प्रेम में जड़ पकड़ कर और नेव डाल कर।

सब पवित्र लोगों के साथ (संत लोग और भक्त लोग जिन्हें इस प्रेम का अनुभव है) भली भांति समझने की शक्ति पाऊँ ; कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊँचाई, और गहराई कितनी है।

और मैं मसीह के उस प्रेम को जान सकूँ जो ज्ञान से परे है, कि मैं परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाऊँ। (इफसियों 3:17-19)

जैसा पिता ने यीशु से प्रेम रखा वैसा ही यीशु ने मुझ से प्रेम रखा, मैं उनके प्रेम में बना रहुँ। इससे बड़ा प्रेम मेरे लिये किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दें। (यूहन्ना 15:9,13)

परमेश्वर मुझ पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब मै पापी ही था तभी मसीह मेरे लिये मरे। (रोमियों 5:8)

उसका अनुग्रह मुझ पर इतना अधिक है कि प्रभु ने अपने पुत्र के लहू द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों की क्षमा करके अपने अनुग्रह के धन के अनुसार प्रेम दिया है। वह मुझे कितनी अच्छी तरह जानते है और जानते हैं कि हमेशा मेरे लिये क्या उत्तम है। (इफिसियों 1:7)

क्योंकि चाहे पहाड़ हट जायें और पहाड़ियाँ टल जायें, तौभी परमेश्वर की करूणा मुझ पर से कभी न हटेगी, और उनकी शांतिदायक वाचा न टलेगी, यहोवा जो मुझ पर दया करता है, उसका यही वचन है। (यशायाह 54:10)

परमेश्वर सच्चा है (विश्वासयोग्य है, भरोसेमंद है और जो उस पर भरोसा करते है उनके प्रति वचन सदा वफ़ादारी और सच्चाई से निभाते हैं)। (1 कुरिन्थियों 1:9)

हे मेरे मन (पूरे प्रेम से और आभार से स्तुति करते हुये) यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहें!

हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह और उसके किसी उपकार को न भूलना वही मेरे (हम सबके) सभी अधर्म को क्षमा करता, और मेरे सब रोगों को चंगा करता है, वही तो मेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता है, और मेरे सिर पर करुणा और दया का मुकुट बांधता है। (भजन संहिता 103:1-4)

वही तो मेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है, जिससे मेरी जवानी उकाब की नाई नई हो जाती है यहोवा सब पिसे हुओं के लिये धर्म और न्याय से काम करता है।

यहोवा दयालु और अनुग्रहकारी है, विलम्ब से कोप करने वाला और अति करूणामय है। वह सदा वाद विवाद करता न रहेगा, न उसका क्रोध सदा के लिये भड़का रहेगा। जैसे आकाश पृथ्वी से ऊंचा है, वैसे ही उसकी करूणा उसके डरवैयों के उपर प्रबल है उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है उसने मेरे अपराधों को मुझसे उतनी ही दूर कर दिया है।

जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है वैसे ही यहोवा मुझ पर दया करता है। यहोवा की करूणा मुझ पर युग युग है। (भजन संहिता 103:5, 6,8,9,11-13,17)

मैं यहोवा पर भरोसा रखता हूँ मैं करुणा से घिरा रहुँगा। (भजन संहिता 32:10)

मैं हर समय यहोवा को धन्य कहुँगा; उसकी स्तुति निरंतर मेरे मुख से होती रहेगी। मैं यहोवा पर घमण्ड करूँगा। नम्र लोग यह सुनकर आनन्दित होंगे। मेरे साथ यहोवा की बढ़ाई करो, और आओ मिलकर हम उसके नाम की स्तुति करें!

मैं यहोवा के पास गया, तब उसने मेरी सुन ली, और मुझे पूरी रीति से निर्भय किया। जिन्होंने उसकी ओर दृष्टि की, उन्होंने ज्योति पाई; और उनका मुंह कभी काला न होने पाये इस दीन जन ने पुकारा तब यहोवा ने सुना, और मुझको मेरे कष्टों से छुड़ा लिया। यहोवा के डरवैयों के चारों ओर उसका दूत छावनी किये हुये उनको बचाता है।

मैंने यहोवा को परखा है, देखा है कि यहोवा कैसा भला है। मैंने देखा है कि वह धन्य हो जाते है जो उसकी शरण लते हैं। (भजन संहिता 34:1-8)

अध्याय 2: आपका भविष्य

दुखिया के सब दिन दुख भरे रहते हैं, परन्तु मेरा मन प्रसन्न रहता है मैं मानो नित्य भोज में जाता हूँ। (नीतिवचन 15:15)

(मेरा क्या होता) यदि मुझे विश्वास न होता कि मैं जीवितों की पृथ्वी पर यहोवा की भलाई को देखुंगा, तो मैं मूर्छित हो जाता।

हाँ, मैं यहोवा की बाट जोहता रहूँगा, हियाव बांधे और मेरा हृदय दृढ़ रहे; हाँ, मैं यहोवा की बाट जोहता रहूँगा। (भजन संहिता 27:13,14)

जो कहपनायें वह मेरे विषय में करते हैं उन्हें वह जानते हैं, वे हानि की नहीं, वरन कुशल की हैं, और अंत में वह मेरी आशा पूरी करेंगे। (यिर्मयाह 29:11)

हे मेरे प्राण तू क्यों गिरा जाता है? तू अंदर ही अंदर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर भरोसा रख; क्योंकि वह मेरे मुख की चमक और मेरा परमेश्वर है, मैं फिर उसका धन्यवाद करूँगा। (भजन संहिता 42:11)

आशा से लज्जा नहीं होती क्योंकि पवित्र आत्मा जो मुझें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम मेरे मन में डाला गया है। (रोमियों 5:5)

क्योंकि यहोवा सूर्य और ढाल है; यहोवा अनुग्रह करेगा और महिमा देगा; और मैं खरी चाल चलता हूँ, मुझसे वह कोई अच्छा पदार्थ रख न छोड़ेगा। (भजन संहिता 84:11)

और मुझे इस बात का भरोसा है, कि उसने जिसने मुझमे अच्छा काम आरम्भ किया है, वही मुझमें उसे यीशु के दिन तक पूरा करेगा। (फिलिप्पियों 1:6)

क्योंकि मैं उसका बनाया हुआ हूँ; और मसीह यीशु में उन भलें कामों के लिये सृजा गया हूँ जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से मेरे करने के लिये तैयार किया। (इफिसियों 2:10)

उसके यहाँ एक एक विषय और एक एक काम का समय है इसलिये मैं परमेश्वर के बलवन्त हाथों के नीचे दीनता से रहता हूँ। जिससे वह मुझे उचित समय पर बढ़ायें। (सदोपदेशक 3:17, 1 पतरस 5:6)

परमेश्वर जो योजना बनाते हैं वे तुरंत नहीं हो जाती। क्योंकि इस दर्शन की बात नियत समय में पूरी होने वाली है, वरन इसके पूरा होने का समय वेग से आता है; इसमें धोखा न होगा, चाहे इसमें विलम्ब भी हो तौभी मैं इसकी बाट जोहते रहूँगा; क्योंकि वह निश्चय पूरी होगी और उसमें देर न होगी। (हबक्कूक 2:3)

मेरा दृढ़ता से ढाढ़स बंध जायेगा, मैं शरण लेने इसलिये दौड़ा हूँ, कि उस आशा को जो सामने रखी है प्राप्त करूँ वह आशा मेरे प्राण के लिये ऐसा लंगर है जो स्थिर और दृढ़ है, और पर्दे के भीतर तक पहुँचता है। (इब्रानियों 6:18,19)

मुझे भय नहीं है क्योंकि मैं आश्वस्त हूँ और मैं जानता हूँ कि मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूँ (परमेश्वर मेरे हर काम में मेरे सहयोगी हैं) मेरे लिये सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न कर रही हैं, क्योंकि मैं उनकी इच्छा के अनुसार बुलाया गया हूँ। (रोमियों 8:28)

मेरा परमेश्वर ऐसा सामर्थी है कि मेरी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो मुझ में कार्य करता है (उसका कार्य मेरी प्रार्थनाओं, इच्छाओं, विचारों, आशाओं और सपनों से कहीं बढ़कर है)। (इफिसियों 3:20)

यीशु मसीह में परमेश्वर की विरासत का हिस्सा बना। मसीह जिसमें मैं भी उसी की मनसा से (परमेश्वर की) जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार ही सब कुछ करता है, पहिले से ठहराये जाकर मीरास बना (मैं पहले ही चुन लिया और नियुक्त किया गया)। (इफिसियों 1:11)

व्यवस्था की यह पुस्तक मेरे चित्त से कभी न उतरने पायेगी, इसी में मैं दिन रात ध्यान दिये रहुँगा, इसलिये कि जो कुछ उसमें लिखा है उसके अनुसार मैं करने की चौकसी करूँ; क्योंकि ऐसा करने से मेरे सब काम सुफल होंगे, और मैं प्रभावशाली होऊँगा। (यहोशू 1:8)

यह वचन मेरे बहुत निकट, वरन मेरे मुँह और मन ही में है, ताकि मैं इस पर चलुँ। (व्यवस्थाविवरण 30:14)

उसी प्रकार परमेश्वर का वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता हैं; वह व्यर्थ ठहरकर उनके पास न लौटेगा (बिना कोई प्रभाव डाले, बेकार) परन्तु जो उनकी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिये उन्होंने इसे भेजा है उसे वह सुफल करेगा। (यशायाह 55:11)

क्योंकि मैं, जब मेरे उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप (परमेश्वर का वचन) इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है मैं उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलता जाता हूँ। (2 कुरिन्थियों 3:18)

और मैं इस संसार (युग) के सदृश नहीं बनूंगा, (इसके अनुसार, इसके बाहरी रूप और नकली रिवाजो को नहीं अपनाऊंगा)। परन्तु मैं अपनी बुद्धि के नये हो जाने से अपना चाल चलन (अपना रवैया, अपने आदर्श) भी बदलुंगा जिससे मैं परमेश्वर की भली, और भावती और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करता रहूँ। (रोमियों 12:2)

मुझ पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा, कि मुझे ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद का मूल्य क्या है? और वह यह है, कि मसीह जो महिमा की आशा है मुझ में रहता है। (कुलुस्सियों 1:27)

परमेश्वर के सामने जिस पर मैंने विश्वास किया और जो बातें हैं ही नही, उनका नाम ऐसे लेता हूँ जैसे मानो वे हैं। मैं कहता हूँ कि मैं एक चुना हुआ वंश, और राज–पदधारी, याजकों का समाज, पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हूँ, इसलिये कि जिसने मुझे अंधकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करूँ। (रोमियो 4:17, 1 पतरस 2:9)

जो दिन परमेश्वर ने ठहराया है उस दिन मैं उसके वचन उसका निज भाग ठहरूँगा, और वह मुझ से ऐसी कोमलता करेंगे जैसी कोई अपने सेवा करने वाले पुत्र से करे। (मलाकी 3:17)

प्रेरित पौलुस की तरह, मेरी यह भावना नही कि मैं पकड़ चुका हूँ: परन्तु केवल यह एक काम करता हूँ, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ। ताकि वह इनाम पाऊँ, जिसके लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर उठाया है। (फिलिप्पियों 3:13,14)

अब मैं बीती हुई घटनाओं का स्मरण नहीं करता, न प्राचीन काल की बातों पर मन लगाता हूँ। देखो, वह एक नई बात करते हैं; वह अभी प्रगट

होगी; मैं उससे अंजान न रहुंगा । वह जंगल में एक मार्ग बनायेंगे और निर्जल देश में नदियां बहायेंगे। (यशायाह 43:18,19)

क्योंकि मैं परमेश्वर का हूँ जो अपने नाम के निमित्त मेरे अपराधों को मिटा देते हैं और मेरे पापों को स्मरण नहीं करेंगे। (यशायाह 43:25)

क्योंकि मैं परमेश्वर की बाट जोहता हूँ, मैं नया बल प्राप्त करता जाऊँगा, मैं उकाबों की नाईं उड़ुँगा, मैं दौड़ुँगा और श्रमित न होऊँगा, चलुँगा और थकित न होऊँगा। (यशायाह 40:31)

मैं यह निश्चित जानता हूँ कि जिस बात की परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरी करने को भी सामर्थी है। (रोमियों 4:21)

अध्याय 3: मसीह में तुम्हारी धार्मिकता

मेरी खातिर परमेश्वर ने यीशु को जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने मेरे लिये पाप ठहराया (उसको मिसाल बनाया) कि मैं उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाऊं (ताकि मैं यीशु की भलाई द्वारा उसकी नज़र में स्वीकारा जाऊं और सही रिश्ता कायम कर सकूँ)। (2 कुरिन्थियों 5:21)

हे परमेश्वर तेरे नाम के योग्य तेरी स्तुति पृथ्वी की छोर तक होती है। तेरा दाहिना हाथ धर्म से भरा है; (भजन संहिता 48:10)

वह मुझे अंत तक दृढ़ भी करेगा (मुझे स्थिरता, शक्ति, सामर्थ देगा और मेरा न्याय करेगा, वह सभी दोषों और अपराधों से मुझे बचायेगा) ताकि मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के दिन में निर्दोश ठहरूँ। (1 कुरिन्थियों 1:8)

धन्य है वह जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं (परमेश्वर की पुनर्जीवित संतान इसी अवस्था में होती है उसका प्रेम और उद्धार पाती है) मैं हूँ जो उनकी धार्मिकता के लिये भूखा और प्यासा हूँ (परमेश्वर के साथ खड़े

रहकर भलाई और धार्मिकता कर रहा हूँ) क्योंकि मैं तृप्त किया जाऊँगा। (मत्ती 5:6)

मैं अपना बोझ यहोवा पर डाले हूँ (जान गया हूँ ये बोझ वह संभालेंगे) और वह मुझे संभालेंगे; वह धर्मी को कभी टलने नहीं देंगे (फिसलते, गिरने या असफल नहीं होने देंगे)। (भजन संहिता 55:22)

बाइबल मेरी खातिर भी लिखी गई थी, कि मेरे लिये विश्वास धार्मिकता गिना जाये यानी मेरे लिये क्योंकि मैं उस पर विश्वास करता हूँ, जिसने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया। (रोमियों 4:24)

इसलिये, जब मैं विश्वास में धर्मी ठहराया गया (दोषमुक्त हुआ, धर्मी कहलाया और परमेश्वर के साथ धर्मी बन खडे होने का अधिकार पाया) तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा मैं परमेश्वर के साथ मेल रख सकता हूँ (उसके साथ मेल मिलाप रखने का मैं आनंद उठा सकता हूँ)। (रोमियों 5:1)

क्योंकि मैं धर्मी हूँ मै खराई से चलता हूँ, (मैं प्रसन्न हूँ, भाग्यशाली हूँ, धन्य हूँ) कि मेरे पीछे मेरे लड़केबाले (मेरी संतान) धन्य होते हैं। (नीतिवचन 20:7)

क्योंकि मैं सदैव धर्मी रहता हूँ, मेरी मुक्ति परमेश्वर की ओर से होती है; संकट के समय वह मेरा दृढ़ गढ़ है। (भजन संहिता 37:39)

जितने हथियार मेरी हानि के लिए बनाये जायें उनमें से कोई सफल न होगा, और जितने लोग मुद्दई होकर मुझ पर मालिश करें, उन सभों से मैं जीत जाऊँगा। यहोवा के दासों का यही भाग (शांति, धार्मिकता, सूरक्षा और विरोध पर विजय) होगा, और मै उसी के कारण धर्मी ठहरूँगा (उसी में मैं परमेश्वर का आदर्श दास बना) यहोवा की यही वाणी है (मुझे वह न्याय दिलाता है)। (यशायाह 54:17)

क्योंकि मैं समझौता न करने वाला धर्मी हूँ, परमेश्वर की आंखे सदा मुझ पर लगी रहती हैं और उसके कान भी मेरी दोहाई की ओर लगे रहते हैं।

जब मैं इक धर्मी दोहाई देता हूँ तो (परमेश्वर) यहोवा सुनता है और मुझे सब विपदाओं से छुड़ाता है मुझ पर बहुत सी विपत्तियाँ पड़ती तो हैं, परन्तु यहोवा मुझे उन सब से मुक्त करता है।

क्योंकि मैं यहोवा का दास हुँ वह मेरा प्राण मोल लेकर बचा लेता है। मैं उसका शरणागत हूँ और उस पर विश्वास करता हूँ इसलिये मैं कभी दोषी न ठहराया जाऊँगा न दण्डित किया जाऊँगा। (भजन संहिता 34:15, 17,19,22)

मैं स्वयं को धार्मिकता द्वारा स्थिर करूँगा (धार्मिकता जो परमेश्वर की व्यवस्था और इच्छा अनुसार है) मैं अंधेर से बचुँगा, क्योंकि मुझे डरना न पडेगा, और मैं भयभीत होने से बचुँगा, क्योंकि भय का कारण मेरे पास न आयेगा। (यशायाह 54:14)

क्योंकि मैं (समझौता न करनेवाला) धर्मी हूँ मैं जवान सिंह के समान निडर हूँ। (नीतिवचन 28:1)

क्योंकि मेरा ऐसा महायाजक नहीं, जो मेरी निर्बलताओं में मेरे साथ दुखी न हो सके; परंतु वह सब बातों में मेरी नाई परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला।

इसलिये मैं अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बांध कर चलूँगा (परमेश्वर का सिंहासन मेरी अयोग्यताओं को नजरादांज करके मुझे दान में मिला है) कि मुझ पर दया हो, (मेरी असफलताओं के लिये) और वह अनुग्रह पायें, जो आवश्यकता के समय मेरी सहायता करें। (इब्रानियों 4:15,16)

इसलिये अब जबकि मैं, अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरा हूँ (दोषरहित, धर्मी और परमेश्वर से नाता जुड़ा है) तो (यह तो मानी बात है) उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे? (रोमियों 5:9)

क्या ही धन्य हूँ मैं (खुश, भाग्यशाली, समृद्ध और संतुष्ट) क्योंकि मैं दुष्टों की पुक्ति पर नहीं चलता, और न पापीयों के मार्ग में खड़ा होता हूँ, और न ठठा करनेवालों की मण्डली में बैठता हूँ।

परन्तु मैं यहोवा की व्यवस्था (उनके नज़रिये, उनके आदेश और शिक्षायें) से प्रसन्न रहता हूँ। और उनकी व्यवस्था पर दिन रात ध्यान करता रहता हूँ। मैं उस वृक्ष के समान हूँ, जो बहती नालियों के किनारें लगाया गया है।

और अपनी ऋतु में फलता है और जिसके पत्ते कभी मुर्झाते नहीं। इसलिये जो कुछ भी मैं करता हूँ सफल होता है (सिद्धता प्राप्त करता है)। (भजन संहिता 1:1-3)

व्यवस्था की यह पुस्तक मेरे चित्त से कभी न उतरेगी, पर इसी में मैं दिन रात ध्यान दिये रहुँगा, इसलिये कि जो कुछ इसमें लिखा है उसके अनुसार करने की मैं चौकसी करूँगा क्योंकि ऐसा करने से मेरे सब काम सुफल होंगे, और मैं प्रभावशाली होऊँगा। (यहोशु 1:8)

यहोवा का नाम दृढ़ कोट है; और मै जो (सदैव) धर्मी हूँ (परमेश्वर से सही नाता रखे हूँ) उसमें भाग कर सब दुर्घटनाओं से बचता हूँ। (नीतिवचन 18:10)

उसके (मसीह के) दिनों में धर्मी फूले फलेंगे और जब तक चन्द्रमा बना रहेगा, तब तक शांति बहुत रहेगी। (भजन संहिता 72:7)

जो वाचा (प्रभु ने) उन दिनों के बाद मुझ से बांधी है वह यह है, कि वह अपनी व्यवस्थाओं को मेरे हृदय पर लिखेंगे वह मेरे विवेक में उन्हें डालेंगे

वह मेरे पापों को और अधर्म के कामों को फिर कभी स्मरण नहीं करेंगे। और इन सबकी अब जब क्षमा हो गई हैं, तो फिर पाप का बलिदान नहीं रहा (क्योंकि मेरे पाप और पाप का दण्ड सब माफ़ हो गया इसलिये मुझे पाप के लिये अब दण्ड नहीं भोगना पड़ेगा)। (इब्रानियों 10:16,18)

मुझे पूरा विश्वास है कि मैं यीशु के लहू द्वारा उस नये और जीवते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का मुझे हियाव हो गया है। जो उसने परदे अर्थात अपने शरीर से होकर मेरे लिये अभिषेक किया था। (इब्रानियों 10:19,20)

मेरी खातीर यीशु जो पाप से अज्ञात था उसे परमेश्वर ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें से होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जायें (उसकी भलाई के कारण हम परमेश्वर द्वारा स्वीकारें जाये और निकट आ सकें)। (2 कुरिन्थियों 5:21)

अध्याय 4: भय पर विजय पाना

क्योंकि परमेश्वर ने मुझे भय की नही (डरपोक, कांपती हुई, सुकडी और भय से आंतकित) पर सामर्थ, और प्रेम और संयम की आत्मा दी है। (2 तीमुथियुस 1:7)

मैं यहोवा के पास गया (और उनसे पूछा) तब उसने मेरी सुन ली (उनके वचन में उन्होंने वादा किया है) और मुझे पूरी रीति से निर्भय किया। (भजन संहिता 34:4)

मैं अपने मन को घबराने या डरने नही देता (मैने स्वयं को रोक लिया है अब मैं उत्तेजित और परेशान नही होता, और मैं स्वयं को भयभीत और शंकित और डरा और अस्थिर नहीं होने देता)। (यूहन्ना 14:27)

जिस समय मुझे डर लगेगा मैं परमेश्वर पर भरोसा रखूँगा परमेश्वर की सहायता से मैं उसके बचन की प्रशंसा करूँगा, परमेश्वर पर मैंने भरोसा रखा है, मैं नहीं डरूँगा । कोई प्राणी मेरा क्या कर सकता है। (भजन संहिता 56:3,4)

(डरने की कोई बात ही नहीं है) मैं नहीं डरूँगा, क्योंकि परमेश्वर मेरे संग है, मैं इधर उधर नहीं ताकूँगा, क्योंकि वह मेरा परमेश्वर हैं, वह मुझे दृढ़ करेगा और मेरी सहायता करेगा, अपने धर्ममय (विजयी) दाहिने हाथ से वह मुझे संभाले रहेगा। (यशायाह 41:10)

परमेश्वर ने स्वयं कहा है मैं तुझे कभी न छोडूँगा और न कभी तुझे त्यागूँगा, (मैं कभी) नहीं (मैं कभी) नहीं (मै कभी) नहीं, किसी भी तरह न छोडूँगा और त्यागूँगा और न कभी असहाय और बेसहारा छोडूँगा (कभी तुझ पर अपनी पकड़ ढीली न छोडूँगा) इस बात की खात्री है।

इसलिये मैं बेधडक हो कर कहता हूँ कि प्रभु मेरा सहायक है; मैं न डरूँगा (मैं न आंतकित होऊँगा न भयभीत और न घबराऊँगा) मनुष्य मेरा क्या कर सकता है। (इब्रानियों 13:5,6)

क्योंकि यहोवा मेरा परमेश्वर, मेरा दाहिना हाथ पकड़ कर कहता है, डर मत, मैं तेरी सहायता करूँगा। (यशायाह 41:13)

मैं डरता नही हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ (कि परमेश्वर मेरे हर कार्य में मेरे सहयोगी है) कि मेरे लिये सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं, क्योंकि मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ और उसी के लिये उसकी इच्छा अनुसार बुलाया गया हुँ। (रोमियों 8:28)

परमेश्वर जो मेरा रचनेवाला है कहता है, मत डर, क्योंकि मैंने तुझे छुड़ा लिया है। मैंने तुझे नाम लेकर बुलाया है, तू मेरा ही है। जब तू जल में होकर

जाये मैं तेरे संग संग रहुँगा और जब तू नदियों में होकर चले, तब वे तुझे डुबा ने सकेंगी, जब तू आग में चले तब तुझे आंच न आयेगी, और उसकी लौ तुझे जला न सकेगी। क्योंकि मैं यहोवा तेरा परमेश्वर हूँ, इस्राएल का पवित्र मैं उद्धारकर्ता हूँ। (यशायाह 43:1-3)

मैं भयभीत नहीं होऊँगा, क्योंकि भय से कष्ट होता है।

इसके बजाय, मुझे उस पर विश्वास रखने से हियाव और भरोसे के निकट आने का अधिकार है। इसलिये मैं हियाव नहीं छोड़ता (न ही भय के कारण निराश होता या मूर्छित होता हूँ) (1 यूहन्ना 4:18, इफिसियों 3:12,13)।

परमेश्वर मेरा शरणस्थान और बल है। (महान और शक्तिशाली है परीक्षा से अछूता) संकट के समय अति सहज से मिलनेवाला सहायक । इस कारण मुझे कोई भी भय नही चाहे पृथ्वी उलट जाये, और पहाड़ समुद्र के बीच डाल दिये जायें। (भजन संहिता 46:1,2)

मैं हियाव बांध कर दृढ़ रहूँगा, भय ने खाऊँगा और न ही मेरा मन कच्चा होगा। क्योंकि जहाँ मै जाऊँगा वहीं मेरा परमेश्वर यहोवा मेरे संग रहेगा। (यहोशु 1:9)

मैं नहीं डरूँगा क्योंकि यहोवा की दृष्टि मुझ पर बनी रहती है (क्योंकि मैं उसकी उपसना, आदर और स्तुति करता हूँ) मैं उसकी करूणा की आशा रखता हूँ। (भजन संहिता 33:18)

मैं कल के लिये चिंता नहीं करता, क्योंकि कल का दिन अपनी चिंता आप कर लेगा, आज के लिये आज का ही दुख बहुत है। (मत्ती 6:34)

मैं भयभीत नही होता क्योंकि मेरी आशा फिर नहीं टूटेगी, मैं नहीं घबराता क्योंकि मैं फिर लज्जित नहीं होऊँगा और मुझपर स्याही न छायेंगी क्योंकि

मेरा कर्ता मेरा पति है, उसका नाम सेनाओं का यहोवा है, और इस्राएल का पवित्र मेरा छुड़ाने वाला है, वे सारी पृथ्वी का भी परमेश्वर है। (यशायाह 54:4)

जब मुझपर डरने या घबराने की परीक्षा आती है तो मैं स्वयं से कहता हूँ, हियाव बांध, मत डर देख, मेरा परमेश्वर पलटा लेने और प्रतिफल देने को आ रहा है। हाँ, परमेश्वर आकर मेरा उद्धार करेंगा। (यशायाह 35:4)

मैं नहीं डरता क्योंकि परमेश्वर ने अपनी महिमा के धन के अनुसार मुझे दान दिया है, कि मैं उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवंत होता जाऊँ (वे स्वयं मेरे भीतर और मेरे व्यक्तित्व में वास करता है)। (इफिसियों 3:16)

मैं यहोवा की बड़ाई करूँगा और उसके नाम की स्तुति करूँगा। मैं यहोवा के पास गया तो उसने मेरी सुन ली, और मुझे पूरी रीति से निर्भय किया। (भजन संहिता 34:3,4)

मैं भयभीत नहीं हूँ क्योंकि प्रेम में भय नही होता। (भय और आतंक आसपास नही रहता वरन सिद्ध प्रेम (सपूर्ण और विशुद्ध) भय को दूर करता है क्योंकि भय से कष्ट होता है, और मैं भय नहीं करता क्योंकि मैंने प्रेम में सिद्धता प्राप्त की है (प्रेम की संपूर्णता में मै बड़ा हूँ)। (1 यूहन्ना 4:18)

परमेश्वर मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है मैं किससे डरूँ? यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है, मैं किसका भय खाऊँ? जब कुकर्मियों ने जो मुझे सताते और मुझीसे बैर रखते थे, मुझे खा डालने के लिए मुझपर चढ़ाई की तब वह ठोकर खाकर गिर पडे। चाहे सेना भी मेरे विरुद्ध छावनी डाले तौभी मैं नही डरूँगा। चाहे मेरे विरुद्ध लड़ाई ठन जायें उस दशा में भी मैं हियाव बांधे निश्चित रहूँगा।

क्योंकि वे मुझे विपत्ती के दिन में अपने मंडप में छिपा रखेगा, अपने तंबू के गुप्त स्थान में वह मुझे छिपा लेगा और चट्टान पर चढ़ायेंगा अब मेरा सिर चारों ओर के शत्रुओं से ऊँचा होगा; मैं यहोवा के तंबू में जयजयकार के साथ बलिदान चढ़ाऊँगा और उसका भजन गाऊंगा। (भजन संहिता 26:1-3,5,6)

मैं भयभीत नहीं होऊँगा क्योंकि पहले ही दिन उसने मुझसे कहा मत डर क्योंकि पहले ही दिन से जब मैंने समझने बुझने के लिए मन लगाया और अपने परमेश्वर के सामने अपने को दीन किया, उसी दिन मेरे वचन सुने गये और प्रभु का दूत मेरे वचनों को सुनकर आ गया। (दानिय्येल 10:12)

जब मुझे मुकदमें के लिए लोग सभाओं और हाकिमों और अधिकारियों के सामने ले जायेंगे तो भी मैं चिंता नहीं करूँगा कि मैं किस रीति से या क्या उत्तर दूँ या क्या कहूँ। क्योंकि पवित्र आत्मा उसी घड़ी मुझे सिखा देंगा, कि क्या कहना चाहिए। (लूका 12:11)

यहोवा मेरा चरवाह है, मुझे घटी न होगी वह मुझे हरी–हरी चराइयों में बैठाता है। वह मुझे सुखदायी झरनोंके पास ले चलता है, वह मेरे जी में जी लाता है। धर्म के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है। चाहे मैं घोर अंधकार से भरी हुई, तराई में होकर चलुँ, तौभी हानि से न डरूंगा। क्योंकि तू मेरे साथ रहता है, तेरे सोंटे और लाठी से मुझे शांति मिलती है। तू मेरे सताने वालों के सामने मेरे लिए मेज बिछाता है, तूने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमण्ड रहा है।

निश्चित भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ–साथ बनी रहेंगी, और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूँगा। (भजन संहिता 23:1-6)

निष्कर्ष: दृढ़ रहना

मैं दृढ़ रहूँगा क्योंकि मसीह ने स्वतंत्रता के लिए मुझे स्वतंत्र किया है इसलिए मैं इसी में स्थिर रहूँगा और दासत्व के जुए में फिर से कभी ना जुतुँगा। (गलातियों 5:1)

मैं अपना हियाव कभी न छोडूँगा क्योंकि इसका प्रतिफल बड़ा है क्योंकि मुझे धीरज धरना अवश्य है, ताकि परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके मैं प्रतिज्ञा का फल पा सकूँ। (इब्रानियों 10:35,36)

लेखिका के बारे में

जॉयस मेयर दुनिया के प्रमुख व्यावहारिक बाइबल शिक्षकों में से एक है। न्यूयॉर्क टाइम्स की यह प्रसिद्ध लेखिका होने के कारण यीशु मसीह के माध्यम से आशा और बहाली पाने में उनकी पुस्तकों ने लाखों लोगों की मदद की है। जॉयस मेयर मिनिस्ट्रीज़ के माध्यम से, वह मन, मुंह, मूड और व्यवहार पर विशेष ध्यान देने के साथ कई विषयों पर शिक्षा देती है। उनकी खरी संचार शैली उन्हे स्वयं के अनुभवों को खेलकर और व्यवहारिक रूप से साझा करने देता है ताकि दूसरे जो कुछ उन्होने सीखा है दूसरे उसे अपने जीवन में लागू कर सकें। जॉयस ने लगभग 100 पुस्तके लिखीं है जिनका 100 भाषाओं में अनुवाद किया गया है। वह हर साल एक दर्जन से अधिक घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करती है और लोगों को अपने प्रतिदिन के जीवन का आनंद उठाना सिखाती हैं। पिछले 30 वर्षों में उनकी वार्षिक महिला सम्मेलन ने दुनिया भर से 200,000 से अधिक महिलाओं को आकर्षित किया है। जॉयस की दुखी लोगों की दर्द करने का मजुनू आशा के हाथ का आधार है जो कि जॉयस मेयर मिनिस्ट्रीज़ का अंग है जो उनके गृहनगर सेंट लुइस सहित दुनिया भर में प्रचार कार्यक्रमों में सहायता देती है।

प्रभु के साथ एक व्यक्तिगत संबंध के लिए प्रार्थना

अगर आपने कभी यीशु मसीह जो शांति का राजकुमार है उसको कभी अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रुप में ग्रहण नही किया है तो मैं आपको निमंत्रित करती हूँ कि आप इस समय ऐसा करें। आप निम्नलिखित प्रार्थना को करें और अगर आप इस बात के प्रति वाकई ईमानदार हैं तो आप मसीह में एक नए जीवन को अनुभव करेंगे।

हे पिता,

आपने इस जगत से ऐसा प्रेम रखा कि आपने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनंत जीवन पाए।

आपका वचन कहता है कि हम विश्वास के द्वारा अनुग्रह से ही बचाए गए हैं और यह आपकी ओर से एक दान है। हम उद्धार को कमाने के लिए कुछ भी नही कर सकते हैं।

मै विश्वास करता हूँ और अपने मूँह से अंगीकार करता हूँ कि यीशु मसीह आपका पुत्र और जगत का उद्धारकर्त्ता है। मैं विश्वास करता हूँ कि क्रूस पर वह मेरे लिए मारा गया और मेरे सारे पापों को उठा कर उनकी कीमत को चुकाया। मुझे अपने हृदय में इस बात का विश्वास है कि आपने यीशु को मृतकों में से जिलाया है।

मैं आपसे अपने पापों की क्षमा माँगता हूँ। मैं अंगीकार करता हूँ कि यीशु मेरा प्रभु है। आपके वचनानुसार, मेरा उद्धार हो गया है और मैं अनन्त काल आपके साथ व्यतीत करुँगा। धन्यवाद पिता, मैं बहुत आभारी हूँ। यीशु के नाम से, आमीन।

इन पदों को देखो यूहन्ना 3:16; इफिसियों 2:8,9; रोमियों 10:9,10; 1 कुरिन्थियों 15:3,4; यूहन्ना 1:9; 4:14-16; 5:1,12,13

To contact the author in the United States, please write:
Joyce Meyer Ministries
P.O. Box 655,
Fenton, Missouri 63026
or call: (636) 349-0303
or log on to: www.joycemeyer.org

To contact the author in India, please write:
Joyce Meyer Ministries
Nanakramguda,
Hyderabad - 500 008
or call: 2300 6777
or log on to: www.jmmindia.org